RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

अच्छे शब्दों के प्रयोग से बुरे लोगों का भी दिल जीता जा सकता है।

भगवान बुद्ध

वर्ष-04, अंक - 37 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 16 जून 2022 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

पुलिस की भर्ती में अग्निपथ जवानों को प्राथमिकता देगी सरकार

भोपाल। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने घोषणा की है कि, भारतीय सेना में शॉर्ट टर्म एग्रीमेंट के आधार पर 'अग्निपथ योजना' के तहत भर्ती किए गए सैनिकों को मध्यप्रदेश पुलिस की भर्ती में वरीयता दी जाएगी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को थल सेना, नौसेना और वायुसेना में सैनिकों की भर्ती संबंधी 'अग्निपथ' नामक योजना की घोषणा की, जिसके तहत सैनिकों की भर्ती चार वर्ष की लघु अवधि के लिए संविदा आधार पर की जाएगी। चौहान ने इस योजना का स्वागत करते हुए कहा, ऐसे जवान जो अग्निपथ योजना में सेवाएं दे चुके होंगे, उन्हें मध्यप्रदेश पुलिस की भर्ती में प्राथमिकता दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि, अग्निपथ योजना युवाओं को सेना से जोड़ेगी और 45 हजार नौकरियां पैदा करेगी। उन्होंने कहा, इस योजना को शुरू करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को हृदय से धन्यवाद देता हूं। भारतीय सेना देश का गौरव है और देशवासियों का अभिमान है। भारतीय सेना के जवान हमारे हीरो हैं, रोल मॉडल हैं। युवाओं को भारतीय सेना से जोड़ने, देश की सीमाओं की सुरक्षा करने और भारत माता की एकता और अखण्डता की रक्षा करने के लिए अग्निपथ योजना प्रारंभ की गई है।

केन्द्र ने की घोषणा

अधिक योग्य और युवा सैनिकों को भर्ती करने के लिए दशकों पुरानी चयन प्रक्रिया में बड़े बदलाव के संबंध में रक्षा मंत्रालय ने बताया कि योजना के तहत तीनों सेनाओं में इस साल 46 हजार सैनिक भर्ती किए जाएंगे और चयन के लिए पात्रता आयु साढ़े 17 वर्ष से 21 वर्ष के बीच होगी और इन्हें 'अग्निवीर' नाम दिया जाएगा। सशस्त्र बलों द्वारा समय-समय पर घोषित की गई संगठनात्मक आवश्यकता और सेना की नीतियों के आधार पर चार साल की सेवा पूरी होने पर 'अग्निवीर' को सशस्त्र बलों में स्थायी नामांकन के लिए आवेदन करने का अवसर प्रदान किया जाएगा। योजना में नियमित सेवा के लिए हर बैच से 25 प्रतिशत सैनिकों को बरकरार रखने का प्रावधान किया है।

जिला पंचायत चुनाव में कांग्रेस को खल रही कलावती की कमी तो भाजपा भी अपनों को नहीं कर पा रही संतुष्ट, मैदान में 78 प्रत्याशी

माही की गूंज, झाबुआ।

लंबे समय तक जिला पंचायत अध्यक्ष रही स्व: कलावती भूरिया के निधन के बाद पहली बार हो रहे चुनाव में कांग्रेस की और से कलावती भूरिया की कमी महसूस की जा रही है। चुनावी मैनेजमेंट में माहिर कलावती भूरिया के निधन के बाद कांग्रेस में मैनेजमेंट की कमी महसूस की जा रही है। शायद इसीलिए जिलापंचायत के कई वार्डों में 1 से ज्यादा दावेदार ताल ठोक रहे है। कुछ ऐसी ही स्थिति भाजपा की भी है, दोनों ही दलों ने भले ही अपने अधिकृत उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है, लेकिन हकीकत यही है कि, वे अपने असन्तुष्ट नेताओं को चुनावी मैदान से नहीं हटा सकती है जिसके चलते दोनों ही दलों के 1 से अधिक नेता अपनी दावेदारी जता रहे हैं, 15 वार्डों के लिए 78 प्रत्याशी मैदान में हैं। यही नहीं सोशल साइटों पर नेता एक दूसरे के खिलाफ भद्दे कमेंट तक कर रहे हैं और यह कार्य अपने आप को अनुशासित कहने वाली भाजपा में ज्यादा हो रहा है।

वार्ड क्रमांक 1:- वार्ड क्रमांक 1 से 6 उम्मीदवार मैदान में है, इसमें अमलियार सीता, भूरा अमलियार, भूरिया गीता, गीता चौहान, नैना और संता नराण भाबर शामिल है। भाजपा में यहां से गीता अमरसिंह चौहान तथा कांग्रेस ने गीता शंकरसिंह भुरिया को अपना अधिकृत प्रत्याशी घोषित किया है।

वार्ड क्रमांक 2:- यहां से कुल 7 प्रत्याशी मैदान में है, जिसमें बहादुर हटिला, बालु निनामा जोगडिया डामोर, कृष्णा डामोर, मानसिंह मैड़ा, नीता हेमचन्द्र डामोर तथा तेरसिंह भूरिया शामिल है। यहां से भाजपा ने बहादुर हटिला को अपना अधिकृत प्रत्याशी बनाया है, वही कांग्रेस ने नीता हेमचन्द्र डामोर को टिकट दिया है।

वार्ड क्रमांक 3:- यहां त्रिकोणीय मुकाबला है, केवल 3 प्रत्याशी मैदान में है, जिसमें डामोर प्रियंका रूपसिंह, हर्षिता मसानिया तथा कविता उमेश डामोर शामिल हैं। यहां से भाजपा ने हर्षिता वालसिंह मसानिया तथा कांग्रेस ने प्रियंका रूपसिंह डामोर को अपना उम्मीदवार बनाया है।

वार्ड क्रमांक 4:- यहां से 7 प्रत्याशी मैदान में हैं, जिनमें अकमालसिंह डामोर, अमलियार दिनेश, बाबूसिंह, डामोर राकेश, कटारा दिनेश, लाखनसिंह वसुनिया तथा मानसिंह परमार शामिल है। यहां से भाजपा ने दिनेष अमलियार तथा कांग्रेस ने बाबुसिंह मेसा सिंगार को अपना प्रत्याशी अधिकृत घोषित किया है।

वार्ड क्रमांक 5:- वार्ड क्रमांक 5 से 5 प्रत्याशी मैदान में हैं, जिनमें अभयसिंह वाखला, बारिया शंता, कांतिलाल बारिया, दरियावसिंह मैडा, रमिला कैलाश डामोर तथा विजय भाभर शामील है। यहां से भाजपा ने अभय वाखला तथा कांग्रेस ने विजय भाभर को टिकट दिया है।

वार्ड क्रमांक 6:- वार्ड क्रमांक 6 से कुल 8 प्रत्याशी चुनावी समर में अपना भाग्य आजमा रहे हैं। इनमें अर्जुन सिंगाड़, भाबोर कमलसिंह, जोहरसिंह सेमलिया, करणसिंह भूरिया, कुमार शैलेन्द्र सोलंकी, रकसिंह भाभर, रमेश पिता गुलबा मैड़ा तथा रमतु बहादुर परमार शामिल है। यहां से भाजपा ने शैलेन्द्र सोलंकी तथा कांग्रेस ने करणसिंह भूरिया को अपना अधिकृत प्रत्याशी घोषित किया है।

वार्ड क्रमांक 7:- वार्ड क्रमांक 7 से 5 प्रत्याशी मैदान में है, जिसमें डामोर मन्नु भाई, डामोर शांति राजेश, कानु दलसिंग वसुनिया, माजु डामोर तथा तौलसिंह मानिया भुरिया शामिल है। भाजपा से यहा मन्नु डामोर तथा कांग्रेस से शांति राजेश डामोर अधिकृत प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ेंगे।

वार्ड क्रमांक 8:- यहां से कुल 5 प्रत्याशी मैदान में है, जिसमें बसंती डामोर, बसंती वसुनिया, भाबर सोनल जसवंतसिंह, मोता बादु तथा सुषमा राजेश वसुनिया शामिल है। भाजपा ने यहां से सुषमा राजेश वसुनिया को तथा कांग्रेस ने सोनल जसवंत भाबर अपना अधिकृत प्रत्याशी बनाया है।

वार्ड क्रमांक 9:- वार्ड क्रमांक 9 से कुल 6 प्रत्याशी हैं, जिसमें बारिया रेखा, भावना पति संजय निनामा, गरवाल रमीला, कलावती मंगलसिंह, कटारा निरमा बापू नाथू तथा रेखा निनामा शामिल है। यहां भाजपा ने रेखा अर्जुन बारिया तथा कांग्रेस में 8 व 9 जुन को जारी लिस्ट में अपने प्रत्याशी का नाम घोषित नही किया है। यहा से कांग्रेस की कर्मठ कलावती मंगलसिंह कटारा व नाथु कटारा की बहु निरमा बापु मैदान मे है कांग्रेस यहा अपने दोनो नेताओ को सतुष्ट नही कर सकी जिसके चलते कांग्रेस अपना उम्मीद्वार के नाम की छाप यहा नही लगा पाई। वही इस वार्ड में दिलचस्प यह हे की क्षेत्र के कर्मठ भाजपा नेता रमेश बारिया की बहु तो रमेश बारिया का वेवाई कांग्रेसी नाथु कटारा ने बहु को मैदान में उतारकर चुनावी वेवाई जंग चल रही है। तय है कांग्रेस के एक से अधिक प्रत्याशी होने व वेवाई सहयोग के चलते भाजपा समर्थित प्रत्याशी को लाभ मिलने की चर्चा है। साथ ही यहा जयस की उम्मीद्वार रेखा निनामा भी चुनावी मैदान में पहली बार ताल ठोक रही है।

वार्ड क्रमांक 10:- यहां केवल 3 प्रत्याशी मैदान में है, जिसमें अनिता रमसू पारगी, भुरिया रमिला तथा डामोर नेहा शामिल है। यहां से भाजपा की अधिकृत प्रत्याशी नेहा डामोर तथा कांग्रेस के अधिकृत प्रत्याशी रमिला कालुसिंह भुरिया है।

वार्ड क्रमांक 11:- यहां से 8 प्रत्याशी हैं, जिसमें बामनिया शन्ता, बारिया सुशीला रूपसिंग, हटिला ममता, पल्लवी कटारा, शारदा बालू चरपोटा, सीता डोडियार, सुमित्रा मैड़ा तथा सुनीता वसुनिया शामिल है। यहां भाजपा की ओर से शारदा बालू चरपोटा तथा कांग्रेस की ओर से ममता बहादुर हटिला चुनाव लड़ेंगे।

वार्ड क्रमांक 12:- यहां से भी केवल 3 प्रत्याशी है, जिसमें अनीता मुणिया, अन्नु पति अजमेरसिंह तथा भील शारदा डामोर शामिल है। यहां से भाजपा ने अन्नु अजमेरसिंह भूरिया को तथा कांग्रेस ने शारदा डामोर को अपना प्रत्याशी बनाया है।

वार्ड क्रमांक 13:- यहां 5 प्रत्याशी मैदान में है, जिसमें अंगुरबाला जगदीश शर्मा, कृष्ण गरवाल, ललिता कृष्णपाल सिंह, रामकन्या तुलसीराम गोयल तथा सुनीता कुंवर चंद्रवीर लाला शामिल है। भाजपा ने यहां से ललिता कुंवर कृष्णपालसिंह को तथा कांग्रेस ने सुनिता कुंवर चंद्रवीर राठोर को अपना प्रत्याशी घोषित किया है।

वार्ड क्रमांक 14:- यहां से कुल 7 प्रत्याशी चुनावी मैदान में ताल ठोक रहे हैं, जिसमें दिनेश निनामा, गजेंद्र रामचंद वसुनिया, कलावती गेहलोत, नीलेश मीणा, प्रेम मेहजी भूरिया, उदयसिंह तथा विक्रमसिंह मैड़ा शामिल है। भाजपा ने यहां से नीलेश मीणा को तथा कांग्रेस ने विक्रम वालसिंह मैड़ा को टिकट दिया है।

सपा-बसपा को विधायकों ने दिया झटका

भोपाल।

मध्य प्रदेश में अगले वर्ष होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले माहौल चुनावी होता जा रहा है। ऐसे में भाजपा में 3 विधायक शामिल हुए। सपा विधायक राजेश कुमार शुक्ला, बसपा विधायक संजीव सिंह कुशवाहा और निर्दलीय विधायक विक्रम सिंह राणा ने भगवा पार्टी का दामन थाम लिया है।

छतरपुर के बिजावर से सपा के विधायक राजेश शुक्ला और भिंड से बीएसपी के विधायक संजीव कुशवाहा ने अपनी पार्टी छोड़कर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की मौजूदगी में भगवा पार्टी की सदस्यता ली। संजीव कुशवाहा की राजनीतिक पृष्ठभूमि भी बीजेपी से ही रही है। उनके पिता रामलखन सिंह पांच बार सांसद रह चुके हैं।

वर्तमान में ये दोनों विधायक बाहर से भाजपा को समर्थन दे रहे थे। खास बात ये है कि, इन तीनों विधायकों पर दलबदल नियम लागू नहीं होगा। क्योंकि समाजवादी पार्टी से केवल एक विधायक राजेश शुक्ला के भाजपा में शामिल होने से पार्टी का 100 प्रतिशत विलय भाजपा में हो गया है।

वहीं रामबाई और संजीव कुशवाहा के रूप में बसपा के पास दो विधायक हैं। इस तरह 50 प्रतिशत विलय भाजपा में होने पर भी दलबदल अधिनियम लागू नहीं होगा। बता दें कि, एमपी में जुलाई में ही नगरीय निकाय चुनाव होना है। और इन विधायकों के शामिल होने से कांग्रेस को कड़ी टक्कर और भाजपा को बड़ा समर्थन मिलेगा। 230 सदस्यों की एमपी विधानसभा में इस समय बीजेपी के 127 सदस्य हैं।

राष्ट्रपति उम्मीदवार की चर्चा से गायब हुए केसीआर

नई दिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रपति चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के खिलाफ संयुक्त उम्मीदवार उतारने पर आम सहमति बनाने के लिए तृणमूल कांग्रेस अध्यक्ष एवं पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बेनर्जी द्वारा बुधवार को बुलाई गई विपक्षी दलों की बैठक में तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) शामिल नहीं हुई। ये बात थोड़ी चौंकाने वाली इसलिए भी है क्योंकि तेलंगाना राष्ट्र समिति (टीआरएस) के प्रमुख और मुख्यमंत्री के चंद्रशेखर राव (केसीआर) ने हाल के दिनों में खुद को राष्ट्रीय भूमिका में पेश करने के हर मौके को भुनाने की कोशिश की है। चाहे वह एक अलग नई 'राष्ट्रीय स्तर' की पार्टी बनाने की घोषणा करना हो या फिर अलग-अलग राज्यों में जाकर गैर-भाजपाई नेताओं से मिलना हो। लेकिन अब, ममता बेनर्जी के 22 राजनीतिक दलों को राष्ट्रपति चुनाव पर चर्चा के लिए एक बैठक के लिए आमंत्रित करने के पत्र ने उनकी योजनाओं को विफल कर दिया है। केसीआर बुधवार को दिल्ली में बैठक में शामिल नहीं हुए और न ही उन्होंने किसी मंत्री या पार्टी के वरिष्ठ नेता को भेजा। रिपोर्ट्स के मुताबिक, केसीआर ने यह अनुमान नहीं लगाया था कि ममता बेनर्जी राष्ट्रपति की वार्ता में नेतृत्व करेंगी, जबकि वह खुद को उस भूमिका में देखते हैं। बैठक में कांग्रेस की उपस्थिति केसीआर के दूर रहने का एक और कारण है। दरअसल कांग्रेस पार्टी राज्य में प्रमुख विपक्षी दल है और भाजपा के बढ़ते प्रभाव के बावजूद, तेलंगाना में एक बड़ी ताकतवर पार्टी बनी हुई है। इसलिए केसीआर राज्य में अपने प्रमुख प्रतिद्वंद्वी के साथ मंच साझा करते नहीं दिखना चाहेंगे।

पार्टी सूत्रों ने कहा कि, मुख्यमंत्री राहुल गांधी द्वारा राज्य सरकार की आलोचना से विशेष रूप से नाराज थे। दरअसल जब पिछले महीने राहुल गांधी वारंगल में एक जनसभा को संबोधित करने गए थे तो उन्होंने सीएम केसीआर पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा, 'मैं तेलंगाना के लोगों से पूछना चाहता हूं कि उन्हें टीआरएस सरकार से क्या मिला। इस सरकार की लापरवाही से आत्महत्या करने वाले किसानों की विधवाएं यहां मेरे साथ बैठी हैं। मैं उन्हें क्या बताऊं... सिर्फ इतना कि कांग्रेस के राज में ऐसा नहीं होगा।'

हाल ही में केसीआर ने ÷वैकल्पिक एजेंडा÷ बनाने के प्रयास में कई राजनीतिक नेताओं से मिलने के लिए दौरे शुरू किए थे। अपने प्रमुख के उत्साह से उत्साहित, टीआरएस नेताओं ने पार्टी का नाम बदलने का सुझाव दिया था, जिसे भारतीय राष्ट्र समिति (बीआरएस) रखा जा सकता है। पिछले कुछ महीनों में केसीआर ने जद (एस) प्रमुख देवेगौड़ा, आप के अरविंद केजरीवाल, द्रमुक के एम के स्टालिन, झारखंड मुक्ति मोर्चा के शिबू और हेमंत सोरेन, किसान नेता राकेश टिकैत, सपा के अखिलेश यादव, शिवसेना के उद्धव ठाकरे और राजद के तेजस्वी यादव से मुलाकात की है।

ग्राम पंचायत सरपंच पद के लिए त्रिकोणीय घमासान, बागियों ने बढ़ाई भाजपा की मुसीबत

मतदाता का मौन, सभी प्रत्याशी कर रहे अपनी-अपनी जीत के दावे, वार्डो में सीधे मुकाबले

माही की गूंज, बामनिया। गौरव भंडारी

ग्राम पंचायतों के होने वाले चुनावो में इस बार ग्राम पंचायत बामनिया का परिदृश्य पूरी तरह से बदला हुआ है। यहा नगर पंचायत खत्म होने के बाद, तीन ग्राम पंचायतों में बट गई थी, जिस कारण ग्राम पंचायत बामनिया, रामपुरिया और मुल्थनिया के चुनाव तब से अगल से होते हैं। कोई चुनाव नही होने के कारण इन तीन पंचायतो में चुनाव के समय माहौल किसी बड़े स्तर के चुनाव के तरह रहता था। जिले सहित आसपास के जिलों से भी प्रभावी नेताओ का डेरा यही रहता था। लेकिन कोरोना संक्रमण के चलते पंचायत चुनाव में हुई देरी के कारण अब ये तीन पंचायते भी बाकी सभी पंचायतो के साथ होने वाले चुनावों से साथ शामिल हो गई है। जिससे ग्राम में पंचायत चुनाव को लेकर हर बार वाला उत्साह नही देखा जा रहा है। हर बार यहां से दोनों दल अधिकृत उम्मीदवार मैदान में उतारते थे, लेकिन सरपंच प्रत्याशी घोषित होने से जनपद और जिला पंचायत के प्रत्याशीयो को होने वाले नुकसान को देखते, इस बार पार्टी समर्थित प्रत्याशियों की घोषणा नही की गई। हालांकि कांग्रेस ने जरूर अपनी और से अधिकृत उम्मीद्वार उतारा है, लेकिन भाजपा खुलकर बोलने में जरूर हिचकिचा रही है। यहां मण्डल अध्यक्ष और भाजपा के पुराने कार्यकर्ता वर्तमान सरपंच रामकन्या मखोड के साथ होने से उन्हें ही अधिकृत प्रत्याशी माना जा रहा है। तो बागी हुए भाजपाई मोती खड़िया की पत्नी सुशीला खड़िया और पपु डामर की पत्नी झाली डामर भी अपने बैनर, पोस्टर पर भाजपा नेताओं का फोटो लगा कर प्रचार कर रहे है। फिलहाल सभी प्रत्याशी अपने-अपने हिसाब से स्थानीय नेताओं के भरोसे मुकाबले में उतरे हुए है।

त्रिकोणीय मुकाबला होने की संभावना, कुल चार प्रत्याशी मैदान में

यहां पूर्व में सरपंच की अजजा अनाराक्षित सीट थी, जिसे पुरुष की सीट माना जाता था। लेकिन पिछले चुनाव में सरपंच पद में रामकन्या मखोड ने अपने सभी प्रतिद्वंद्वीयो को धराशाई करते हुए, 1600 से अधिक मतों से जीत दर्ज की थी। इस बार नए आरक्षण के अनुसार सरपंच सीट अजजा महिला आरक्षित है। सरपंच पद के लिए 06 दावेदार सामने आये थे, लेकिन दो प्रत्याशीयो की नाम वापसी बाद अब मैदान में कुल 04 प्रत्याशि बचे हैं। कांग्रेस की और से एक मात्र प्रत्याशि के रूप में जोशनी राजेश पंवार को अधिकृत किया है। जबकि भाजपा से जुड़े तीन प्रत्याशि मैदान में है, जिसमे वर्तमान सरपंच रामकन्या संजय मखोड, वर्तमान जनपद सदस्य सुशीला मोती खड़िया और दो बार की पंच झाली पप्पू डामर मैदान में है। वर्तमान स्थितियो को देखे तो ग्राम पंचायत सरपंच पद के लिए यहां त्रिकोणीय मुकाबला हो सकता है जो कि, कांग्रेस अधिकृत जोशनी पंवार, रामकन्या मखोड और भाजपा की बागी उम्मीदवार सुशीला खड़िया के बीच होना तय है। विगत 5 वर्षों में कई विवाद और विकास कार्यो की लक्ष्यपूर्ति के दावे पूरे नही होने की आमजनता की शिकायतो के साथ-साथ भ्रष्टाचार के गंभीर आरोपो से घिरी रामकन्या मखोड के सामने दोबारा पंचायत में काबिज होंकर अपने आप को साबित करने की बड़ी चुनोती है। कई वार्डो सड़क, नाली निर्माण, सफाई और नल-जल योजना का सुचारू संचालन सहित, शासन की योजनाओं का लाभ दिलवाने के नाम पर वोटो की तलाश में है। इनकी ही पार्टी से जुड़े कई कार्यकर्ता इनका विरोध कर रहे है, जिससे निपटना बड़ी चुनौती है। वही जनपद सदस्य सुशीला खड़िया जो की खुद रामकन्या मखोड के परिवार की करीबी होकर इस बार भाजपा अधिकृत होकर सरपंच का चुनाव लड़ना चाहती थी, लेकिन स्थानीय भाजपा नेताओं का पूर्ण समर्थन नही मिलने पर बागी होकर मैदान है। रामकन्या मखोड से नाराज भाजपाई वोट इनके साथ जाने की संभावना से इनकार नही किया जा सकता। पाच साल तक ग्राम पंचायत में निर्माण कार्य करने के बाद से बकाया भुगतान को लेकर मोती खड़िया ने सरपंच रामकन्या मखोड से किनारा कर खुद की पत्नी को मैदान में उतार दिया। कांग्रेस ने अधिकृत उम्मीदवार के रूप में बिल्कुल ही नया चेहरा मैदान में उतारा। कुछ साल पहले ही विदेश में रह कर लौटने के बाद गांव के विकास का दावा कर जोशनी पवार मैदान में है। जो कांग्रेस के वोट बैंक के कारण बराबर की टक्कर दे रही हैं, कांग्रेस के दो बागी मैदान में उतरे थे, लेकिन उन्होंने अंतिम समय मे नामांकन वापस लेकर कांग्रेस के एक जुट हो कर लड़ने का संदेश दिया। किसी प्रकार का कोई पुराना राजनीतिक अनुभव नही होना और कई स्थानीय कांग्रेस नेताओं की खराब छवि इनके जीत के रास्ते मे सबसे बड़ा रोड़ा है। चुकी ग्राम पंचायत में भाजपाई मतदाताओं की संख्या अधिक है, इनकी जीत और हार का मापदंड भाजपा के दो बागी उम्मीदवार का वोट बैंक तय करेगा।

रामकन्या संजय मखोड

जोशनी राजेश पंवार

सुशीला मोती खड़िया

झाली पप्पू डामर

मतदाता का मौन, सरपंच प्रत्याशी अकेले मैदान में उतरे हुए

सभी क्षेत्रीय नेता कही न कही से चुनावी मैदान में उतरे हुए है, इसलिए इस बार किसी पार्टी का कोई सर्वे बहार नही आया है। मतदाता भी पूरी तरह से मौन है, सभी प्रत्याशी अपनी-अपनी जीत के दावे कर रहे हैं, लेकिन किसी प्रत्याशी के पीछे कार्यकर्ता की लंबी- चौड़ी फ़ौज नही है और प्रत्याशी अकेले मैदान में है जिससे प्रत्याशी के दम-खम का पता लगा पाना मुश्किल है।

पंचों को लेकर घमासान, जनपद और जिला पंचायत प्रत्याशियों के भरोसे

पंचायत चुनाव में यु तो सरपंच पद को लेकर बाजार में सरगर्मी होती है, लेकिन यहां ग्राम पंचायतों के अलग-अलग वार्डो में पंच के लिए हो रहे चुनाव के लिए घमासान की स्थिति बनी हुई है। लगभग वार्डो में पंचों के मध्य सीधा मुकाबला है, पंचायत के 20 वार्डो में से एक मात्र वार्ड निर्विरोध हो पाया वो भी दो आये नामांकन में से एक के निरस्त होने के चलते हुआ है। कुल मिलाकर इस बार का चुनाव काफी रोचक होना तय है, नगर में चारो और चुनाव की चर्चा आम है।

कर्मचारी मतदान से होंगे वंचित, बिना मतदान की व्यवस्था के लग गई ड्यूटी

कलेक्टर मिश्रा का अजीब बयान मतदान करना जरूरी तो करवाना भी जरूरी

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के पहले दौर के लिए 25 जून को होने वाले मतदान के लिए निर्वाचन अधिकारी एवं प्रशासन ने अपनी और से तैयारियां शुरू कर दी है। शांतिपूर्ण ढंग से मतदान की प्रक्रिया निपटाने के लिए कर्मचारियों की ड्यूटी लगा दी गई है, जिसके आदेश जारी हो चुके हैं। पहले चरण में पेटलावद के साथ-साथ थांदला विकास खण्ड के भी चुनाव सम्पन्न होने है। जिसके लिए पेटलावद के शासकीय कर्मचारियों की मतदान के लिए ड्यूटी लगाई उसमे पेटलावद विकास खण्ड के सैकड़ो कर्मचारियों की ड्यूटी थांदला विकास खण्ड में लगा दी गई। ड्यूटी लगने के बाद कर्मचारी अपने कार्य पर जाने के लिए तत्पर है, लेकिन उनके सामने स्वयं के मतदान की बड़ी समस्या खड़ी हो गई, ड्यूटी पर जाने वाले कर्मचारियों को 24 जून को ही विकास खण्ड मुख्यालय पर जाना है। मतलब 25 जून को होने वाले मतदान ड्यूटी पर तैनात कर्मचारी अपना मतदान नही कर सकेगा। हालांकि विधानसभा और लोकसभा जैसे चुनाव में ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों के लिए डाक मतपत्र के माध्यम से मतदान की व्यवस्था होती है, लेकिन गांव की सरकार चुनने में शायद इन कर्मचारियों का मतदान नही हो पायेगा।

कैसे होगा, सबसे पहले मतदान, फिर सारे बाकी काम

आमजन को मतदान करने और मतदान की महवत्ता समझाने में शासकीय कर्मचारियों का बड़ा योगदान होता है। मतदान को लेकर समय-समय पर जागरूकता अभियान चलाया जाता है। ऐसे में खुद मतदान के लिए जागरूक करने वाले सैकड़ो कर्मचारी इससे वंचित रहेगे। मामले में पेटलावद के अनुविभागीय अधिकारी शिशिर गेमावत ने बताया कि, ड्यूटी जिले से लगी है और ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों के मतदान लिए चर्चा चल रही है। वही जिला कलेक्टर सोमेश मिश्रा ने अजीब बयान देते हुए कहा कि, मतदान करना जरूरी है और मतदान करवाना भी जरूरी है। ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों के लिए मतदान की व्यवस्था के लिए किसी योजना की जानकारी कलेक्टर साहब की और से नही दी गई ।

दूसरे दौर में चार विकास खण्ड में होना है चुनाव

जिले में पहले दौर में केवल दो विकास खण्डों के चुनाव सम्पन्न होना है। जबकि 4 विकास खण्ड झाबुआ, मेघनगर, रामा और राणापुर के चुनाव दूसरे दौर में एक साथ होना है। ऐसे में इन विकास खण्डों से कर्मचारियों की ड्यूटी लगा कर पहले दौर का मतदान करवाया जा सकता था। जिससे पेटलावद और थांदला विकास खण्ड के कर्मचारियों को मतदान करने का पूरा अवसर मिल सके। ड्यूटी की खबर के बाद कई कर्मचारियों से चर्चा हुई, जिन्होंने बताया कि, ड्यूटी पर जाने के लिए हमेशा के लिए तैयार है, लेकिन हमारे मतदान की व्यवस्था भी होनी चाहिये।

सत्ता का सेमी फाइनल साबित होंगे पंचायत चुनाव

माही की गूंज, थांदला।

लंबे अंतराल के बाद संपन्न होने जा रहे पंचायत चुनाव में अभ्यर्थियों के साथ मतदाता प्रतिदिन दांवतो का लुफ्त उठा रहे हैं। यह चुनाव कई मायनों में महत्वपूर्ण साबित होंगे। कोरोना संक्रमण काल के बाद पंचायती राज के अधीन निवर्तमान सरपंचों का कार्यकाल समाप्त होने के बाद उन्हें राज्य शासन द्वारा एक्सटेंशन देखकर दोबारा उन्हें प्रधान पद पर नियुक्त किया गया था। जिसमें 4 वर्ष से अधिक समय का वक्त बीत जाने के बाद आखिरकार हाईकोर्ट के निर्देश पर प्रदेश सरकार ने पंचायती चुनाव कराने का ऐलान किया है। प्रदेश में पंचायती चुनाव भले ही दिल्ली आधार पर नहीं हो रहे है, किंतु इस चुनाव में लोकसभा व विधानसभा के तर्ज पर सत्ताधारी दल भाजपा व कांग्रेस के प्रमुख नेताओं के फोटो प्रचार सामग्री में संलग्न है साथ ही प्रचार सामग्री की भरमार ग्रामीण अंचलों में देखी जा रही हैं। कई मायनों में वर्तमान सरपंचों से मतदाताओं की खासी नाराजगी है, फिर भी इस चुनाव में जिधर दम उधर हम की भूमिका में मतदाता नजर आ रहा है। त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव सत्ताधारी दल के लिए सेमीफाइनल चुनाव माना जाएगा। वहीं राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देश पर पलायन पर गए मतदाताओं को लाने हेतु स्थानीय आलाधिकारी अभी से उन लोगों की सूची तैयार कर रहे हैं जो पलायन पर गए हुए हैं, उन्हें लाने के लिए प्रशासन अभी से तैयारी कर रहा है। वहीं पंचायत चुनाव लड़ रहे अभ्यर्थी भी अपने-अपने पंचायत क्षेत्र में पलायन पर गए श्रमिकों के परिजन से संपर्क साध कर उन्हें चुनाव पूर्व यहां बुलाने व मतदान करने हेतु मान, मनोहर कर रहे हैं। वादाखिलाफी से मतदाता नाराज कहा गया है कि, दिल्ली व भोपाल में सरपंच की कुर्सी का फैसला ग्रामीण मतदाता ही करते हैं। वर्तमान प्रधानमंत्री भी इस बात को सार्वजनिक सभा में कह चुके हैं कि, भारत की आत्मा गांवों में बसती है। केंद्र व राज्य सरकार की जनहितेषी कल्याणकारी योजनाओं को भ्रष्ट अधिकारी सही ढंग से क्रियान्वित नहीं कर पा रहे हैं। यही वजह है कि, क्षेत्र की अधिकांश ग्राम पंचायतों में लाखों रुपए की लागत से पेयजल टंकी का निर्माण कर अंचल की अनेक पंचायतों में करोड़ों रुपए का भ्रष्टाचार पंचायत में तैनात सरपंच व आला अधिकारियों ने अपने घर भर लिए हैं।

नगर परिषद चुनाव की चर्चा जोरों पर हर एक चौराहे पर लग रही चुनावी चौपाल

माही की गूंज, मेघनगर। भूपेन्द्र जैन

नगर परिषद के चुनाव की तारीख और फॉर्म भरने की तारीख घोषित होते ही दोनों ही पार्टियां भाजपा और कांग्रेस के उम्मीदवारों में अपनी-अपनी पार्टियों से वार्ड में चुनाव लड़ने की दावेदारी पेश कर रहे हैं। अब तक 100 से ऊपर कई नामांकन फॉर्म ले चुके हैं। फॉर्म भरने की तैयारी कर रहे हैं और मेघनगर में हर जगह चाहे चाय की दुकान हो या पान की दुकान हो या चौराहे पर, बस चुनाव की ही चर्चा चल रही है कोई कहता है कि भाजपा से मेरी टिकट फाइनल हो चुकी है और कोई कहता है कि कांग्रेस से मेरी टिकट फाइनल हो चुकी है। तो कोई निर्दलीय चुनाव लड़ने की बात कर रहा है। अभी तक दोनों ही पार्टियों ने 15 वार्डों में अपने चेहरे नहीं उतारे है, कांग्रेस पार्टी ने अपने उम्मीद्वारों को वार्ड में सक्रिय रहने को कहा है, तो वही 15 ही वार्डों में भाजपा के उम्मीद्वारों की लंबी लिस्ट है। किसे वार्ड का प्रत्याशी बनाए, किसे नहीं इसके लिए भाजपा में चिंतन चल रहा है। भाजपा हों या कांग्रेस दोनों ही पार्टियों के पुराने कार्यकर्ता कह रहे है, अगर हमें पार्टी से टिकट नहीं मिली तो हम निर्दलीय खड़े हो जाएंगे और जीत कर दिखाएंगे। नगर परिषद चुनाव में पार्षद ही अध्यक्ष चुनेगा, इसकी घोषणा होने से चुनाव और भी जबरदस्त बना गया है। इसी को लेकर चुनाव लड़ने वाला व्यक्ति हर एक व्यक्ति के घर जाकर बैठ रहा है, आ रहा है, जा रहा है और मतदाताओं को मनाने में लगा हुआ है। भाजपा और कांग्रेस में अपनी दावेदारी पेश करने के लिए दोनों ही पार्टियों से 4-4 व 5-5 उम्मीद्वार मैदान में उतरने के लिए तैयार है। चुनाव मैं भाजपा और कांग्रेस अपने कोन से नए चेहरे उतारती है यह तो कुछ दिनों बाद ही मालूम पड़ेगा, और किस-किस उम्मीदवारों को मनाती है या नहीं मना पाती, कोन फॉर्म भरता है, कौन फॉर्म खींचता है, कोन निर्दलीय लड़ता है यह तो समय ही बताएगा। यह तो चुनाव है यहां पर सब का अधिकार है, किसे चुनाव लड़ना, किसे नहीं यह तो कुछ दिनों बाद ही मालूम पड़ेगा।

बारिश के बाद बीज की दुकानों पर उमड़ी भीड़, बोवनी का कार्य फिलहाल नही

माही की गूंज, पेटलावद।

क्षेत्र में रविवार से मंगलवार तक हुई बारिश के बाद बाज़ार में खाद-बीज की खरीदी के लिए किसानों की भीड़ लग रही हैं। किसान चुनावी माहौल के बीच बारिश होने के बाद खेती की तैयारियों में जुट गए हैं। फिलहाल पर्याप्त बारिश नही होने के कारण बोवनी का कार्य शुरू नही हुआ है, लेकिन किसान खेत तैयार करने में जुट गए हैं। मंगलवार के बाद से मौसम एक बार फिर से साफ हो गया है। मौसम विभाग के अनुसार 20 जून के बाद ही मानसून की बारिश होने के सम्भवना व्यक्त की जा रही है। पेटलावद विकास खण्ड में हुई बारिश अन्य विकास खण्डों के मुकाबले सबसे अधिक जरूर है, लेकिन बोवनी के लिए पर्याप्त नही है। चुनावी माहौल के बीच अगर मतदान के दिन बारिश होती है तो मतदान प्रभावित होने की आशंका है ।

नगरीय निकाय चुनाव में शिवसेना दिखाएगी दम

जबलपुर।

महाराष्ट्र में कांग्रेस और एनसीपी के साथ गठबंधन कर सत्ता में काबिज शिवसेना मध्य प्रदेश में नगरीय निकाय चुनाव में अपनी ताकत दिखाने को तैयार है। जबलपुर नगर निगम के चुनाव में शिवसेना के 7 उम्मीदवारों ने पार्षद पद के लिए पर्चा दाखिल किया है। शिवसेना की यह पहली लिस्ट थी, जिसमें 7 नेताओं को टिकट दिया गया है। दिलचस्प बात यह है कि शिवसेना के मध्य प्रदेश प्रमुख ठाड़ेश्वर महावर खुद अपने सगे भाई के साथ पार्षद पद के लिए चुनावी मैदान पर उतरने की तैयारी कर चुके हैं।

जबलपुर के राजनीतिक इतिहास में यह पहली बार होगा जब नगर सत्ता के लिए दो भाई एक साथ चुनावी मैदान में हैं, ठाड़ेश्वर महावर सरदार बल्लभ भाई पटेल वॉर्ड से तो उनके सगे भाई गुरुदयाल महावर शंकर शाह नगर वॉर्ड से चुनावी मैदान में उतरने की तैयारी कर चुके हैं। ये दोनों वॉर्ड पहले संयुक्त रूप से शंकर शाह नगर वॉर्ड के रूप में ही जाने जाते रहे हैं, जहां पर 15 वर्षो से ठाड़ेश्वर महावर जीतते आ रहे हैं।

चुनाव पर यह बोले शिवसेना प्रदेश अध्यक्ष

अब जब जनसंख्या बढ़ने के बाद एक अन्य वॉर्ड का निर्माण किया गया तो उनके सगे भाई गुरदयाल भी चुनावी मैदान में उतर रहे हैं। ठाड़ेश्वर महावर ने बताया कि, हम दोनों की उम्मीदवारी पर फैसला महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे लेंगे। उन्होंने कहा कि शिवसेना जीतने वाले उम्मीदवारों को टिकट दे रही है। मध्यप्रदेश में जहां-जहां जिताऊ उम्मीदवार हैं वहां पर हम चुनाव लड़ने जा रहे हैं।

आप और एआईएमआईएम भी चुनावी मैदान में

मध्य प्रदेश के नगरीय निकाय चुनाव में इस बार आम आदमी पार्टी, अकबरुद्दीन ओवैसी की एआईएमआईएम और शिवसेना, मध्यप्रदेश के दो प्रमुख दल बीजेपी और कांग्रेस को टक्कर देती नजर आएंगी। ये दल लगातार अपनी राजनीतिक जमीन तैयार करने की कोशिश में जुटे थे। ऐसे में जबलपुर में दिलचस्प मुकाबला चुनाव में देखने को मिलेगा।

अब दूरबीन पद्धति द्वारा पथरी व प्रोस्टेट के ऑपरेशन सम्भव

माही की गूंज, थांदला। स्वास्थ्य सुविधाओं में आधुनिकताओं की बात कि जाए तो थांदला भी पीछे नही है। सेंट तेरेसा मिशन हॉस्पिटल में जहा आवश्यकतानुसार स्पेशलिस्ट डॉक्टर्स अपनी सेवा देने को तत्पर दिखाई दे रहे है, वही उनके व जनता की मांग के अनुसार स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि की जा रही है। हाल ही में रविवार को इस अस्पताल में सर्वप्रथम दूरबीन पद्धति से दो मरीज़ों के प्रोस्टेट व गुर्दे की नली की पथरी का आपरेशन, रतलाम के मशहूर यूरोलॉजिस्ट डॉ गौरव नाहर द्वारा किया गया। लंबे समय से दवा ले रहे मरीज़ों ने सेंट तेरेसा मिशन हॉस्पिटल में डाक्टरी परामर्श के बाद जाच करने के बाद उन्हे ऑपरेशन की सलाह दी गई। रविवार आपरेशन के बाद शीघ्र स्वास्थ्य-लाभ होने पर मरीज़ों को महज दो दिनों में छुट्टी दे दी गयी। अब तक इस प्रकार के बिना चीरा-टाके वाले अत्याधुनिक ऑपरेशन केवल इन्दौर, वडोदरा, अहमदाबाद जैसे बड़े शहरों में ही संभव थे, लेकिन अब यह सुविधा रियायती दरों पर थांदला सेंट तेरेसा मिशन हॉस्पिटल में भी उपलब्ध होने से आसपास के रहवासियों में गम्भीर बीमारी के लिए इतनी दुर जाने की जरूरत नही होगी।

अनोखा प्रदर्शन कर फंसे कांग्रेसी नेता

इंदौर। इंदौर में पिंजरे में बंद तोते के साथ किए गए प्रदर्शन को लेकर एक पशु हितैषी संगठन ने स्थानीय कांग्रेस नेताओं के खिलाफ वन विभाग से शिकायत की। संगठन का आरोप है कि सियासी प्रदर्शनकारियों ने तोते को पिंजरे में बंद करके वन्य प्राणी संरक्षण अधिनियम 1972 का खुलेआम उल्लंघन किया है।

जानकारी अनुसार, यह विवादास्पद प्रदर्शन नेशनल हेराल्ड से जुड़े कथित मनी लॉन्ड्रिंग केस में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा वरिष्ठ कांग्रेस नेता राहुल गांधी को पूछताछ के लिए तलब किए जाने के विरोध में पार्टी के शहर कार्यालय के सामने किया गया था। चश्मदीदों के मुताबिक कांग्रेस के प्रदर्शनकारियों ने पिंजरे में बंद तोते के साथ खड़े होने के दौरान एक तख्ती थाम रखी थी जिस पर लिखा था- 'मैं भाजपा का तोता हूँ- ईडी।'

कानूनी कार्रवाई करने की मांग

'पीपुल फॉर एनिमल्स' की इंदौर यूनिट के अध्यक्ष प्रियांशु जैन ने बताया कि उन्होंने स्थानीय कांग्रेस नेताओं के इस प्रदर्शन को लेकर वन विभाग से शिकायत की है क्योंकि तोते को पिंजरे में कैद रखकर उसका इस तरह उपयोग करना वन्य प्राणी संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत अपराध है। जैन ने कहा, 'वन विभाग को सियासी प्रदर्शन में इस्तेमाल तोते का पता लगाना चाहिए और उसे पिंजरे की कैद से आजाद कराना चाहिए। प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई भी होनी चाहिए।'

इंदौर रेंज के मुख्य वन संरक्षक (सीसीएफ) एचएस मोहंता ने कहा कि, इस शिकायत पर जांच के बाद उचित कदम उठाया जाएगा।

लापता युवक का शिवना नदी में मिला शव

माही की गूंज, मंदसौर। मोचीवाड़ा के हकीमुद्दीन बोहरा ने तनाव में आकर पशुपतिनाथ की शिवना नदी में छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक सोमवार की शाम से ही घर से लापता था, स्वजन उनकी तलाश में जुटे थे। मंगलवार शाम करीब पांच बजे उनका शव शिवना में तैरता हुआ मिला। कोतवाली के एसआई वरसिंह कटारा ने बताया कि, 68 वर्षीय हकिमउद्दीन पुत्र फखरउद्दीन घडियाली बोहरा निवासी मोचीवाड़ा बोहरा बाखल ने पशुपतिनाथ की शिवना नदी में छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि, मृतक हकिमउद्दीन तनाव में चल रहा था और सोमवार शाम से ही वह घर से लापता था। स्वजन भी उनकी तलाश में जुटे थे। मंगलवार शाम को उनकी लाश भावसार स्कूल के पीछे बालाजी मंदिर के सामने शिवना नदी में दिखाई दी। पुलिस ने शव बरामद कर पीएम के लिये भेजा, लेकिन स्वजन और समाज के लोगों ने पीएम कराने से इनकार कर दिया।

प्यासे कंठ, जिम्मेदार मौन...

माही की गूंज, थांदला।

मेघनगर विकासखंड की सबसे बड़ी पंचायत सजेली सूरजी मोकजी साथ व नानिया साथ में ग्रामीण क्षेत्रों में सुगमता व शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने हेतु शासन संकल्पित है। किंतु विभागीय अधिकारी इस महत्वपूर्ण योजना को पलीता लगाकर शासन को गुमराह कर रहे है। मेघनगर विकासखंड की दो बड़ी पंचायत सजेली सुरजी मोगजी साथ व नानिया साथ में लगभग 4 वर्ष पूर्व एक करोड़ 30 लाख की लागत से ग्रामीणों को पेयजल हेतु नवीन टंकियों का निर्माण कर पाइपलाईन डालकर घरों में नल कनेक्शन दिए गए थे, किंतु आधी आबादी में कुछ समय बाद पानी पहुंचना बंद हो गया। उसके बाद संपूर्ण पेयजल व्यवस्था जस की तस बनी हुई है। भीषण गर्मी में लोगों को पेयजल हेतु निजी ट्यूबवेल पर ही निर्भर होना पड़ रहा है, जो इस गर्मी में वरदान साबित हुए है। गांव के पूर्व सरपंच थावर सिंह उन्नत किसान कीर्तन सिंह नायक व मोती सिंह का कहना है कि, बड़ी टंकी को भरने हेतु पुराने तालाब में गड्ढा खोदकर उसे कुऐ में परिवर्तित कर टंकी भरने का कार्य कर अधिकारियों ने अपने हाथों से अपनी पीठ थपथपा कर ग्रामीणों को गुमराह किया है। वहीं शासन की महत्वकांक्षी योजना में भ्रष्टाचार का आरोप भी लगाया है, तालाब में गड्ढे को कुएं का स्वरूप देकर टंकी तक पानी पहुंचाने के लिए अधिकारियों को बारिश में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, उक्त गड्ढा तालाब में होने से वर्षा जनित जल कीचड़ में तब्दील हो जाता है।

कदवाल तालाब में बने कुआं

ग्रामवासियों का कहना है कि, तालाब के गड्ढों को कुएं का स्वरूप देने पर अधिकारियों से ग्रामीणों का विवाद भी हुआ था। ग्रामीणों का कहना है कि, कदवाल तालाब बहुत बड़ा है उस तालाब के समीप बड़ा कुआं बनाने की मांग की गई थी, किंतु पीएचई के अधिकारियों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया है। यह योजना शने-शने अधिकारियों के लिए जेब गर्म करने का माध्यम बन चुके हैं, इस संदर्भ में ग्रामीणों ने कई बार विभाग के अधिकारियों को वह 181 पर शिकायत से अवगत कराया, किंतु आज पर्यंत तक इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया। आमजन इस गर्मी में पानी के लिए भटकते हैं, इस समय पंचायत चुनाव भी हैं तथा कई अभ्यर्थी अभी से उक्त समस्या हल करने के खोखले वादे भी कर रहे हैं। क्या बोले जिम्मेदार अधिकारी, इस संदर्भ में पीएच के उपयंत्री का कहना है कि, दो नवीन ट्यूबवेल खनन किए गए थे गांव में पानी की समस्या हल हेतु, ग्रामीणों की मांग पर कदवाल तालाब में कुएं की खुदाई की मांग की गई है, इस हेतु उच्चाधिकारियों को अवगत कराया गया है, वह वैकल्पिक समस्या के हल हेतु पंप ऑपरेटर को शीघ्र ही बदला जाएगा।

थांदला जनपद की 67 पंचायत में 311 सरपंच मैदान में

माही की गूंज ,थांदला।

थांदला जनपद क्षेत्र की 67 पंचायतो में सरपंच पद हेतु 311 उम्मीद्वार मैदान में है। सर्वाधिक रत्री व नारेला में 10-10 उम्मीद्वार मैदान में है वही 10 पंचायतो में सीधा मुकबला है।

पढ़े किस पंचायत में कौन उम्मीद्वार

क्र.	पंचायत	नाम - सरपंच उम्मीद्वार
1	झारनी -	डामोर तानसिंह पिता जालम
2	-	कालिया गुला डामोर
3	-	रजनी गरवाल
4	बालवासा	डामोर मैना
5	-	डामोर संजीला प्रकाश
6	-	डामोर सुकली
7	-	कवी डामोर
8	-	लक्ष्मी हरिसिंह पारगी
9	-	निर्मला डामोर
10	छायन	हिरा गेंदालाल डामोर
11	-	वेला मुणिया
12	छापरी	कमलेश भाभोर
13	-	शारदा पति खुमसिंह भाभर
14	-	उदा पति हामजी व्हाया
15	-	झितरा पिता मगन डामोर
16	वट्ठा	डामोर सुनीता पति रमेश
17	-	मंजुला माजू डामोर
18	काकनवानी-	अंजू कैलाश डामोर
19	-	शांता बाबु निनामा
20	बेड़ावा	बबली कटारा
21	-	कटारा धन्ना
22	पंचखेरिया	कालिया कटारा
23	-	श्रीमति कपिला गणावा
24	-	लीला रमशु गणावा
25	-	मंगलिया कटारा
26	पलासडोर	जेरमल डामोर
27	-	कंशु डामोर
28	-	मली चेनसिंह डामोर
29	डूंगरिपाड़ा	अनिल डामोर
30	-	डामोर समेश
31	-	कमिल डामोर
32	-	रामू डामोर
33	-	रस्सू डामोर
34	-	तानसिंह
35	रूपगढ़	मंजुला प्रेमसिंह रावत
36	-	पारसिंह डामोर
37	मोरझरी	बदहींग डामोर
38	-	डामोर बाबुड़ा
39	-	रशुल डामोर
40	-	मंजुला दिनेश डामोर
41	-	तोलिया डामोर
42	मानपुर	बालू मांगू खड़िया
43	-	गवा वाहाडिया खड़िया
44	-	गुमा वालचन्द खड़िया
45	-	कसमेर खड़िया
46	-	राजेश गेंदाल मचार
47	चिकलिया	बाबूड़ी कानूसिंग डामोर
48	-	हवली मुणिया
49	परवलिया	अंजली मुणिया
50	-	दीमा खुशाल सिंगाड़िया
51	-	सब्बू सेनसिंह मुणिया
52	-	श्रीमति सीता मुणिया
53	दौलतपुरा	डामोर राजू
54	-	राकेश मावी
55	-	रमेश मुणिया
56	-	संभूसिंह
57	आमली	भुंडिया बारिया
58	-	रमेश रामचंद डामोर
59	-	रूपा गवजी निनामा
60	खजुरी	कैलाश नाना डामोर
61	-	रुसमाल मईडा
62	मछलईमाता-	बाबूड़ी रमेश पलासिया
63	-	देवली वसुनिया
64	-	दूदा वसुनिया
65	-	रमिला
66	-	सविता थंदार
67	सेमलिया (चेनपुरी)	दल्लू मुन्ना मईडा
68	-	शुशीला क़तीजा
69	-	मुन्नी पति प्रभू वसुनिया
70	सेमलपाड़ा	डामोर सोकली
71	-	नवती जोती
72	-	पिंकी डामोर
73	धामनी छोटी-	डामोर शंकर
74	-	पारु पारगी
75	-	वाहडीया पिता नाथा गरवाल
76	जुलवालिया बड़ा-	डामोर संतोष
77	-	जामसिंह खड़िया
78	-	कमलेश वसुनिया
79	-	कान्ति
80	-	मईडा विनोद
81	-	मांगू कटारा
82	-	नीरू खड़िया
83	जुलवालिया छोटा-	गब्बू मुणिया
84	-	मुन्नी मुणिया
85	-	प्रकाश भीला मुणिया
86	-	प्रमेश मुणिया
87	नवापाड़ा क़स्बा-	कन्ना वसुनिया
88	-	राजेश वसुनिया
89	-	सागू वसुनिया
90	बेड़ावा	भूरिया वरसिंह
91	-	डामोर रमेश
92	-	करणसिंह कामलिया
93	-	खीमा दिलीप भूरिया
94	-	सज्जनसिंह डिंडोर
95	-	थावरिया खड़िया
96	मादलदा	बहादुर मुणिया
97	-	बहादुर मुणिया
98	-	गुलशन भूरिया
99	-	हरचंद सुरजी
100	-	कलसिंह भूरिया
101	-	मंगलिया भूरिया
102	-	मुकेश भूरिया
103	कलदेला	बलवंतसिंह भूरिया
104	-	कमल मईडा
105	-	नरसिंह भाभोर
106	-	भाभर रामसिंह
107	-	हरिसिंह पिता चतरा भूरिया
108	मुंजाल	अड़ सेवली
109	-	भाभर लीला
110	-	भूरी कटारा
111	-	नूरी भूरिया
112	-	सीमा खराड़ी
113	पाड़ाधाम मंजर-	भूरिया हुका
114	-	गरवाल शिल्पा
115	-	कलावती निनामा
116	-	कमली चारेल
117	-	पूजा खड़िया
118	-	श्रीमति काली कटारा
119	बोरडी	डामोर सुरमता
120	-	हुडी डामोर
121	-	कमली परमार
122	-	रमू डामोर
123	बड़ी धामनी -	बिलवाल नीलम
124	-	बिलवाल रीना दीपक
125	-	खीमा मंगलिया खोखर
126	-	मड़ी पडदा
127	-	विनीता गब्बू वसुनिया
128	कोटड़ा	कान्ति भाभोर
129	-	पुष्पा पति सकू डामोर
130	-	रंगु डामोर
131	भीमकुण्ड -	अनीता माणक
132	-	भारतसिंह कटारा
133	-	लालू गालिया अमलियार
134	-	शकुन्तला कटारा
135	सुजापुरा -	बाबुडी डामोर
136	-	गीता डामोर
137	वालाखोरी	जोगा अड़
138	-	कमला निनामा
139	-	मईडा वेशा हरचंद
140	-	मुन्नी भाभोर
141	-	राजू अड़
142	-	वनता मईडा
143	झोसली	किहोरी गजा पति हुरा
144	-	मंजू मैडा
145	-	रूपा गरवाल
146	बिहार	डामोर मनसूड़ी
147	-	डामोर मोता पति नानसिंह
148	-	डामोर सवा रिवु
149	-	गवली डामोर
150	-	लीला चारेल
151	-	नीरु डामोर
152	-	राजू डामोर
153	भीमपुरी-	मगी तारसिंह परमार
154	-	मेरी डामोर
155	-	पिंटा सुरन डामोर
156	-	रसीला डामोर
157	थेथम	गोरकी भाभोर
158	-	कपूरी भाभोर
159	-	रेखा मचार
160	हरिनगर -	डामोर सुरियल
161	-	कमलेश डामोर
162	-	मलसिंह मईडा
163	-	मोहन निनामा
164	-	तानसिंह चारेल
165	-	विनोद भटेरा
166	देवका	भूरिया मनिता
167	-	कर्मा मुणिया
168	-	नाहटी भूरिया
169	-	पांगली निनामा
170	-	रमिला रमेश भूरिया
171	-	शारदा डामोर
172	-	वन्ता सिंगाड़िया
173	गोरियाखांदन-	बामनिया शारदा
174	-	डामोर रसीली
175	खांदान	धापू
176	-	दिल्लू मुणिया
177	-	काना जोगड़िया डामोर
178	-	कान्हा लक्ष्मण गणावा
179	-	नितेश मुणिया
180	खोखर खांदन	चतरसिंह खोखर
181	-	गोपाल डामोर
182	-	कला खोखर
183	-	मईडा वाहडिया
184	-	मुकेश भूरिया
185	-	रमेश भाभोर
186	मियाटी	काली गालिया भाभोर
187	-	कविता अनिल
188	-	किरण भाभोर
189	-	लीला भाभर
190	-	रमिला भाभोर
191	टीमरवानी	हुकली कतिजा
192	-	काली सोहन सिंगाड़िया
193	-	विशना अमलियार
194	उदयपुरिया	अखिलेश वसुनिया
195	-	भारत कटारा
196	-	मोहन वसुनिया
197	खवासा	बारिया मुन्नी बाई
198	-	गंगाबाई खराड़ी
199	-	जेनिबाई केगुसिंह भूरिया
200	-	शकुन्तला वसुनिया
201	रतनाली	बबली भूरिया
202	-	दुर्गा मोरसिंह अमलियार
203	-	लक्ष्मी बहादुर कटारा
204	-	संगीत हवसिंह अमलियार
205	-	सतुरी बापू डिंडोर
206	-	सेता अमलियार
207	सागवा	धनजी गरवाल
208	-	जीवन भूरिया
209	-	कालूसिंह भाभर
210	-	सुरसिंह
211	-	तोलसिंह माल
212	-	वालचन्द माल
213	देवगढ़	हूना गुंडिया
214	-	नाथू सिंगोड
215	-	राजू हरहिंग मैडा
216	-	रायचंद मालीवाड़
217	-	सुनील सतू मावी
218	पाटड़ी	बहादुर मईडा
219	-	हरचंद भाभर
220	-	लीला कटारा
221	-	पारस भाभर
222	-	सुनील भाभर
223	-	तेरसिंह मैडा
224	चापानेर-	भूरालाल मुणिया
225	-	लीला हीरालाल मुणिया
226	-	प्रकाश मुणिया
227	-	राजेश वीरेंद्रसिंह मुणिया
228	-	शारदी मुणिया
229	मकोड़िया	अनीता सिंगाड
230	-	हिरा खराड़ी
231	-	कमला भाभर
232	-	रेणुका सिंगाड
233	-	संगीता सिंगाड
234	-	वेला सिंगाड
235	भामल	बालू वसुनिया
236	-	ममता पति बहादुर सिंह चरपोटा
237	-	डामोर नागुसिंह
238	-	दिनेश डांगी
239	-	दिनेश सिंगाड
240	-	झुमा डांगी
241	-	कालू सिंह मैडा
242	-	मुन्ना कटारा
243	-	पूनमचंद वसुनिया
244	परवाड़ा	डोडियार बालूसिंह
245	-	गामड़ मोहन
246	-	केशु डामोर
247	-	मड़िया भूरिया
248	-	प्रकाश माल
249	-	रंगु मईडा
250	-	रायमल डामर
251	रन्नी	अर्चना कटारा
252	-	देवा सिंगाड
253	-	प्रज्ञा डाबी
254	-	काली कानजी
255	-	हेमलता झोडिया
256	-	खिमजी कटारा
257	-	कांता मानसिंह कटारा
258	-	दुर्गा कटारा
259	-	मालू कटारा
260	-	सुनीता कटारा
261	नरसिंगपाड़ा	गंगाराम
262	-	तोलसिंह गणावा
263	नोगावा नगला	अनीता डोडियार
264	-	भूरी
265	-	कला निनामा
266	-	काली कटारा
267	-	काली मालीवाड़
268	धुमड़िया	बालू गरवाल
269	-	छगन वसुनिया
270	-	मोती झोडिया
271	-	रामसिंह निनामा
272	-	शम्भू वसुनिया
273	-	सोवन
274	कुकडीपाड़ा	अमरी कटारा
275	-	भूरी कटारा
276	-	धापू वालू कटारा
277	-	धापुड़ी
278	-	रमतु नाथू कटारा
279	-	रेलम
280	-	सागर कटारा
281	-	शान्ता कटारा
282	भेरूगढ़	अनीता कालूसिंह डिंडोर
283	-	धापू भूरा भाभर
284	-	कमला पति बाबु डिंडोर
285	-	कटारा मोलकी नाथू
286	-	लीला बाई कटारा
287	-	रंगा कटारा
288	-	शांति पति सेवु भाभर
289	सेमलिया	अणदू
290	-	गली दलसिंह गरवाल
291	-	किरण देवदा
292	-	मीरा डामर
293	-	सोकली
294	तलावड़ा	कला गेहलोत
295	-	लीला कटारा
296	-	पानू माल
297	-	संगीता भाभर
298	-	सुगना कटारा
299	नाहरपुरा -	बसन्ती रंगु कटारा
300	-	दिव्या मैडा
301	-	कटारा बसन्ती मुकेश
302	नारेला	अनीता सिंगाड
303	-	बहादुर माल
304	-	बालू नाथू वसुनिया
305	-	बापू तेरु
306	-	धापू मुकेश वसुनिया
307	-	दिनेश वसुनिया
308	-	मड़ीया भूरजी वसुनिया
309	-	मानजी वसुनिया
310	-	राजू लक्ष्मण डामर
311	-	संभु हुरजी डोडियार

पहली ही बारिश रहवासियों के लिए बनी मुसीबत, रोड कीचड में तब्दील

अवैध कालोनियों में कई जगह नही बने रोड और नाली लोग परेशान

माही की गूंज, पेटलावद।

नगर में बनी अवैध कालोनियों में सुविधा के नाम पर दो-चार रोड बना कर, लोगो को प्लाट बेच दिए गए जहां अब मकानों की भीड़ हो चुकी है। लेकिन सुविधा के नाम पर कोलोनिनाइज़र द्वारा कोई व्यवस्था नही की, जिसका खामियाजा अब लोगो को भुगतना पड़ रहा है। यहा नगर के बामनिया रोड पर टॉकीज के पीछे बनी दामोदर कॉलोनी में रहवासी परेशान हो रहे है। वहीं दीप किराना स्टोर्स के व्यापारी का यहां पर गोडाउन बना हुआ है, व्यापारी के द्वारा यहां पर गली में काली मिट्टी डाल दी गई जिसके कारण से बारिश में रहवासियों को घरों से निकलने में काफी समस्या आ रही है। काली मिट्टी होने से वाहन फंस रहे हैं। जिसकी शिकायत रहवासी मुकेश कुमार भटेवरा के द्वारा सीएम हेल्पलाइन पर भी की गई। इस समस्या के बारे में मुख्य रूप से नगर परिषद के सीएमओ अशोक चौहान को मिट्टी डालने के बाद समस्या से अवगत करवा दिया गया था। जिसके बाद भी नगर परिषद के द्वारा कोई ध्यान नहीं दिया गया। सोमवार शाम को बारिश होने से कीचड़ हो गया। मुकेश भटेवरा ने बताया कि, व्यापारी के द्वारा बड़े वाहन कॉलोनी में लाए जाते हैं, जिससे रोड भी खराब हो रहे हैं वाहन रोड पर खड़े करने के कारण आने-जाने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। इन गलियों में बड़े वाहनों पर रोक लगाई जाए। जिससे रहवासियों को परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। इस संबंध में सीएमओ अशोक चौहान से चर्चा की गई तो उन्होंने कहा कि, मिट्टी हटवा दी गई थी, अगर कुछ मिट्टी रह गई है तो मेरे द्वारा स्वच्छता निरीक्षक को बोल दिया है मिट्टी हटा दी जाएगी।

क्लोनिनाइजर पर कार्रवाई क्यो नही...?

मूल समस्या की जड़ कोलोनिनाइज़र है, जिसके द्वारा बिना अनुमति और सुविधाओं के प्लाटिंग की गई और रोड बना कर देने के झूठे आश्वासन दिए गए। अब इस कॉलोनी ने व्यवस्था नगरपरिषद को करनी पड़ रही है। लेकिन कोलोनिनाइज़र को कोई नोटीस जारी नही हो रहा है, वही रहवासी इलाके में कई व्यापारियों द्वारा बड़े-बड़े गोदाम बना दिये गए। जो नगर परिषद द्वारा बनाये गए रोड को गोदाम पर आने-जाने वाले भारी वाहन नुकसान पहुचा रहे हैं।

मरीज को लेने जा रही एम्बुलेंस आधे घन्टे जाम में फंसी रही

दिन में कई बार लगता हैं जाम, ट्रैफिक की समस्या से परेशान आमजन

माही की गूंज, बामनिया।

मंगलवार को मुख्य चौराहे पर ग्रामीण क्षेत्र में मरीज को लेने जा रही एम्बुलेंस बुरी तरह से फस गई। लगभग 20 से 30 मिनिट की भारी मशक्कत के बाद एम्बुलेंस को निकाला जा सका। यहां बारिश के बाद बीज खरीदी के लिए बाज़ार में उमड़ी भीड़, जिससे रतलाम- झाबुआ मार्ग से गुजरने वाले वाहनों का नगर के मुख्य चोराहे पर जाम की स्थिति का सामना करना पड़ रहा है, यहां अन्य वाहनों के साथ-साथ बड़ी संख्या में 08 लेन सड़क निर्माण कार्य करने वाली कंपनी के बड़े और भारी वाहनो की लगातार आवाजाही होती हैं, वही रेलवे फाटक के बन्द होने के कारण मार्ग पर वाहनो की एक साथ आवाजाही से बार-बार जाम की स्थिति का मुख्य कारण है।

दिन में कई बार लगता है जाम, दुर्घटना का बना रहता है भय

नगर के मुख्य चोराहे पर एक-दो बार नही, बल्कि दिन में कई बार जाम की स्थिति बनती है। जिसको सभालने के लिए पुलिस की और से कोई मुस्तेद नही रहता। सड़क के किनारे खड़े वाहनों और रोड से लगी दुकानों के कारण ट्रैफिक जाम होता है। ट्रैफिक के कारण दुर्घटना का भय भी बढ़ता जाता है, लोग ट्रैफिक से निकलने के लिए कही से भी वाहन डाल देते हैं, जिससे दुर्घटना के साथ-साथ कई बार विवाद की स्थिति भी बन जाती है। नगर के मुख्य चोराहे पर बन रही जाम की स्थिति से निपटने के लिए नगरवासियों ने ट्रैफिक पुलिस की तैनाती की मांग मुख्य चोराहे पर करने की है।

नेहा बृज भूषण परिहार की पीएचडी, ईस्ट मित्रो ने दी बधाई

माही की गूंज , बामनिया।

पीएचडी हेलिंडग डॉक्टर नेहा परिहार

भाजपा नेता ब्रजभूषण परिहार की पत्नी ने शिक्षा के क्षेत्र में पीएचडी की उपाधि प्राप्त कर नगर सहित क्षेत्र को गौरवान्वित किया है। नगर से यह दूसरी पीएचडी है, श्रीमती नेहा परिहार नगर में पीएचडी की उपाधि प्राप्त करने वाली पहली महिला है। श्रीमती परिहार ने श्री सत्य साईं ....प्रोधिगिकी एवं चिकित्सा विज्ञान विश्वविधालय सीहोर मध्यप्रदेश के शिक्षा संकाय के अंतर्गत भोपाल शहर के उच्चतर माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षण के प्रति अभिवत्ति एवं मूल्यों का उनके कार्य की संतुष्टि पर प्रभाव पर अध्ययन विषय मे पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। श्रीमती परिहार ने यह शोधकार्य डॉक्टर संतोष जगवानी के निर्देशन और डॉक्टर पुष्पेंद्र शर्मा के सह निर्देशन में पूर्ण किया। श्रीमती नेहा परिहार की इस उपलब्धि पर नगरवासियों एवं ईस्ट मित्रो ने बधाई प्रेषित कर उज्जवल भविष्य की कामना की है ।

एफएलएन प्रशिक्षण का हुआ समापन, मप्र शिक्षक संघ ने मास्टर ट्रेनर्स को किया सम्मानित

माही की गूंज, पेटलावद। विगत 25 दिनों से चल रहा शिक्षकों का प्रशिक्षण मंगलवार को समापन हुआ। समापन समारोह में मध्यप्रदेश शिक्षक संघ के अध्यक्ष भरत चौधरी ने मास्टर ट्रेनरो को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती को माल्यापर्ण कर हुई। खंण्ड शिक्षा अधिकारी संजय हुक्कु ने अपने उद्बोधन मे कहा कि, जो आप सभी ने यहा सीखा है उसे स्कुल जाकर बच्चो के लिये करना है। वही बीआरसी सियाराम रायपुरिया ने कहा कि, सभी शिक्षकों ने बड़े ही तंमयता से प्रशिक्षण लिया, वही बड़े रोचक तरीके से मास्टर ट्रेनरो ने अपने कार्य को बखूबी अंजाम दिया इनकी जितनी तारिफ़ करो कम है। ट्रेनिंग के पश्चात रेखा राव कन्या संकुल पेटलावद, प्रकाश गुप्ता कन्या संकुल पेटलावद, लोकेंद्र बैरागी संकुल बरवेट, राकेश पाटीदार कन्या संकुल सारंगी को सम्मानित किया गया। इस दौरान पेटलावद खण्ड शिक्षा अधिकारी संजय हुक्कु, बीआरसी सियाराम रायपुरिया, बीएससी महेश काग, बीएससी मोहन सोलंकी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मोहन सोलंकी ने किया और आभार भरत चौधरी ने माना।

दिवांशी चौधरी का चयन मध्यप्रदेश खेल एकेडमी में, सारा खर्च उठायेगी शासन

दिवांशी के साथ-साथ गवली समाज ने भी किया प्रतिभाओं सम्मान

माही की गूंज, पेटलावद।

नगर की बिटिया ने क्रिकेट के क्षेत्र में एक बार फिर नगर ही नहीं जिले का गौरव बढ़ाते हुए, एक बड़े मुकाम को हासिल किया है। मध्यप्रदेश शासन की खेल एवं युवा कल्याण विभाग की खेल एकेडमी मे चयनित हुई। इस चयन स्पर्धा में पूरे मध्यप्रदेश की महिला क्रिकेट खिलाड़ीयों ने भाग लिया और इस स्पर्धा में पहले संभाग स्तर पर चयनित होकर शिवपूरी मे प्रदेश स्तर पर अपना सर्वश्रेष्ठ देकर चयनित हुई। जो झाबुआ जिले के इतिहास में पहली बार हुआ है। देवांशी के चयन की सूचना उन्हे मोबाइल पर प्रदेश खेल अधिकारी द्वारा दी गई, सूचना मिलते ही पुरा परिवार खुशी से झूम उठा। उत्कृष्ट खिलाडियों का चयन किया जाकर, चयनित खिलाडियों को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय खिलाडियों को इस तरह से तैयार किया जाता हैं, जिससे खिलाडियों का चयन राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हो सके। याने खिलाडियों की पढाई से लेकर खेल कोचिंग, रहना, खाने व प्रत्येक खिलाडी पर लगभग 5 लाख रुपये प्रति वर्ष खर्च शासन वहन करेगा। दिवांशी अपने चयन का श्रेय अपने माता-पिता के साथ अपने कोच, बड़े पापा और भरत चौधरी के साथ आर बी सी एफ इंदौर के रमेश भाटिया व हिमांशु बैरागी को देती हैं। बिटिया जो स्कूल गेम्स फेड्रेशन ऑफ इंडिया द्वारा आयोजित राष्ट्रीय टूर्नामेंट मे मध्यप्रदेश टीम के लिये आंध्र प्रदेश में खेल चुकी हैं।

गवली समाज ने देवांशी के साथ समाज की प्रतिभाओ का किया सम्मान

गवली (यादव) समाज युवा संघ मध्यप्रदेश के तत्वाधान में पेटलावद के सामाज की उत्कृष्ट प्रतिभाओ का सम्मान किया गया। जिसने खेल मे राष्ट्रीय स्तर पर समाज को पहचान दिलाने वाली प्रतिभाओ के साथ पढाई मे मेघावी विद्यार्थीयो को सम्मानित किया गया। कु. दिवांशी महेंद्र चौधरी को मध्यप्रदेश क्रिकेट एकेडमी में चयनित होकर समाज को गौरवान्वित करने हेतु संगठन की और से प्रशस्ति प्रमाण पत्र और अयोध्या फाउंडेशन की और से सील्ड प्रदान की गई।

वरिष्ठजनों की उपस्थिति में इनको किया गया सम्मानित

क्रिकेटर देवांशी चौधरी के साथ-साथ समाज की अन्य क्षेत्र में प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं को भी सम्मानित किया गया। जिसमें 10 वीं में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कु. टीशा धनराज गवली, हर्षवर्धन गोपाल मोरिया व कृष्णा राजू पटेल और 12 वीं में कु. नेहा नंदकिशोर यादव का सम्मान किया गया। खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु कु. राधिका शेरूजी ब्रजवासी (कुश्ती) को कुश्ती में सम्मानित कर उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएं दी गई। सम्मान समारोह में उपस्थित समस्त समाजजनों ने कार्यक्रम की सराहना कि, कार्यक्रम पेटलावद स्थानीय समाज के प्यारेलाल चौधरी, महेंद्र चौधरी, मोहन पटेल, महेश पटेल, पूरण ररा, किशनलाल सतोगिया, हीरू सतोगिया, चंदन सतोगिया, कन्हैयालाल गवली, भागीरथ गवली, मोहन चंदेल व सकल पंच कुक्षी से शेरू राठौर, सरदारपुर से नारायण सरपंच गुजेला, रतलाम से कैलाश राठौड़ , थांदला से भगवती दुबेला अन्य समाजगण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन गवली समाज युवा संगठन मध्यप्रदेश के पेटलावद इकाई के कार्यकर्ता राजेंद्र कुमार मोरिया ने किया।

संपादकीय

पदकों से समृद्ध खेल संस्कृति पर मोहर

खेलो इंडिया यूथ गेम्स में हरियाणा की चौधराहट से साबित हुआ कि राज्य के खिलाड़ियों में जीत का दमखम उम्मीदों भरा है। निश्चित रूप से पदक तालिका में नंबर वन आना बताता है कि राज्य में जो खेल संस्कृति विभिन्न सरकारों के दौरान विकसित हुई, उसकी प्रतिष्ठा की फसल अब राज्य को नसीब होने लगी है। राज्य के खिलाड़ी ओलंपिक, विश्व स्पर्धाओं, एशियाड व कॉमनवेल्थ खेलों में अपने खेल कौशल का प्रदर्शन गाहे-बगाहे करते रहे हैं, इन खेलों की पदक तालिका में टॉप पर आना उसी का विस्तार है। इस कामयाबी के कई निष्कर्ष भी हैं। दूध-दही के खाने ने खिलाड़ियों को जो ऊर्जा-खेल क्षमता दी है वह शेष राज्यों से विशिष्ट है। यह भी कि राज्य के युवा हृष्ट-पुष्ट हैं व शारीरिक ताकत हासिल करना उनकी प्राथमिकता है।

नि:संदेह, विजयी खेल संस्कृति विकसित होने में लंबा वक्त लगता है। ऐसा भी नहीं है कि शेष देश में खेल प्रतिभाओं की कमी है, या दमखम का अभाव है। विगत में राज्य में जो खेल नीति बनी और जिस बेहतर ढंग से उसका क्रियान्वयन हुआ, वह भी काफी मायने रखता है। कोई खिलाड़ी रातों-रात तैयार नहीं होता। खिलाड़ी का संकल्प, घर का सहयोग और स्कूल-कॉलेजों में खेलने के बेहतर अवसर प्रतिभा को निखारते हैं। नि:संदेह, इस सफलता में राज्य के तमाम खेल संस्थानों, नीति-नियंताओं और प्रशिक्षकों का योगदान भी है। फिर युवाओं की जीवटता सोने पर सुहागे का काम करती है। विगत में हरियाणा सरकार ने जो बड़े-बड़े नगद इनाम घोषित किए, उसने भी राज्य के खिलाड़ियों में नया जोश भरा। जो अन्य राज्यों के खिलाड़ियों को भी सोचने को बाध्य करता है कि, काश हम भी हरियाणा के लिए खेलते। जाहिरा तौर पर एक खिलाड़ी के खेल का काल सीमित होता है। खेल की क्षमता में गिरावट के बाद उसे रोजगार के नए विकल्प तलाशने पड़ते हैं। ऐसे में राज्य सरकार की वह नीति सराहनीय है जिसमें अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में पदक जीतने वालों को नौकरी देने का प्रावधान है।

नि:संदेह, इस वर्ष संपन्न खेलो इंडिया यूथ गेम्स में हरियाणा द्वारा 52 स्वर्ण पदकों के साथ कुल 137 पदक जीतने की महक में हरियाणा के खिलाड़ियों का खून-पसीना भी शामिल है। खेल मानवीय जीवन की सुंदरतम अभिव्यक्ति है जो एक सामान्य व्यक्ति की विशिष्ट बनने की प्रक्रिया भी है। कहावत भी है कि, सुबह जिसकी हुई सचमुच वो सारी रात नहीं सोया होगा। एक तपस्या की तरह होता है किसी खेल में शिखर की उपलब्धि हासिल करना। अपने आराम, सुख-सुविधाओं का परित्याग करना होता है। तब जाकर साधारण से विशिष्टता हासिल होती है। सैकड़ों दौड़ने वालों में एक ही गोल्ड मेडल जीतता है। उसमें भी तमाम जोखिम होते हैं। इन खेलों के दौरान ग्यारह सौ से अधिक खिलाड़ियों का चोटिल होना बताता है कि खेलों में कितने जोखिम हैं। जो यह भी बताता है कि, हमारे खिलाड़ियों को पूरी तरह प्रशिक्षण नहीं मिल पाया कि वे चोटों से अपना बचाव कर सकें। इस दिशा में हरियाणा सरकार को भी गंभीरता से सोचना होगा। कई बार कोई गंभीर चोट खिलाड़ी का करिअर खराब कर देती है और उसकी टीस जीवनपर्यंत सालती रहती है। हरियाणा सरकार को भी चीन, अमेरिका, रूस, जापान, कोरिया व ऑस्ट्रेलिया के खेल पैटर्न का अध्ययन करना चाहिए कि कैसे ये देश अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में पदकों की झोली भरकर ले जाते हैं। चीन आदि देशों में बच्चों को कड़े अनुशासन में खेलों का प्रशिक्षण दिया जाता है तभी सोने का तमगा जीतने वाले खिलाड़ी तैयार होते हैं। राज्य के तमाम इलाकों में ऐसे गुदड़ी के लालों को तलाशा जाना चाहिए। उन्हें मुफ्त प्रशिक्षण व खेल के संसाधन उपलब्ध कराये जाने चाहिए। राज्य सरकार की वह पहल सराहनीय है, जिसमें कहा गया है कि राज्य में राष्ट्रीय खेल अकादमी बनेगी। साथ ही राज्य में ग्यारह सौ खेल नर्सरी खोली जाएंगी। खेलो इंडिया यूथ गेम्स में हासिल स्वर्णिम सफलता से पैदा हुआ उत्साह कम नहीं होना चाहिए जिससे आगे हमारे खिलाड़ी और बेहतर प्रदर्शन कर पाएं।

वैश्विक मंदी के बावजूद निवेश की उम्मीदें

जयंतीलाल भंडारी

यकीनन वैश्विक मंदी की चुनौतियों का भारत पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। 13 जून को भारत के शेयर बाजार में भी बड़ी गिरावट दिखी। बैंचमार्क सेंसेक्स गोता लगाकर 52 हजार 846 अंकों पर बंद हुआ। डॉलर के मुकाबले रुपया 78 के पार चला गया। लेकिन फिर भी दुनिया के आर्थिक और वित्तीय संगठनों के मुताबिक भारतीय अर्थव्यवस्था दूसरे देशों की तुलना में गतिशील बनी हुई है। वैश्विक क्रैडिट रेटिंग एजेंसी फिच ने भारत की रेटिंग नकारात्मक से उन्नत करके स्थिर की है। खास बात यह भी है कि चुनौतियों के बीच भारत में रिकॉर्ड विदेशी निवेश का सुकूनदेह परिदृश्य उभरकर दिखाई दे रहा है। संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन (अंकटाड) की रिपोर्ट 2022 के अनुसार भारत की एफडीआई रैंकिंग पिछले वर्ष 2021 में एक पायदान चढ़कर 7वें स्थान पर पहुंच गई है। हाल ही में वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक, वित्त वर्ष 2021-22 में भारत ने 83.57 अरब डॉलर का रिकॉर्ड प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्राप्त किया है। अब चालू वित्त वर्ष 2022-23 में भारत की ओर अधिक एफडीआई प्रवाह की नई संभावनाएं बढ़ी हैं।

सवाल है कि, जब पिछले वित्त वर्ष 2021-22 में विश्व की अर्थव्यवस्था में बड़ी गिरावट रही है, इसके बावजूद विदेशी निवेशकों द्वारा भारत को एफडीआई के लिए प्राथमिकता क्यों दी गई है? तो हमारे सामने कई चमकीले तथ्य उभरकर सामने आते हैं। पिछले वित्त वर्ष 2021-22 में भारत की 8.7 फीसदी की सर्वाधिक विकास दर, देश में छलांगें लगाकर बढ़ रहे यूनिकॉर्न, 31.45 करोड़ टन का रिकॉर्ड खाद्यान्न उत्पादन, बढ़ता विदेश व्यापार, नए प्रभावी व्यापार समझौते, 600 अरब डॉलर से अधिक के विदेशी मुद्रा भंडार आदि के कारण एफडीआई तेजी से बढ़े हैं। भारत में निवेश पर बेहतर रिटर्न हैं। भारतीय बाजार बढ़ती डिमांड वाला बाजार है। निश्चित रूप से देश में एफडीआई बढ़ने का एक बड़ा कारण सरकार द्वारा पिछले कुछ वर्षों में उद्योग-कारोबार को आसान बनाने के लिए किए गए कई ऐतिहासिक सुधार भी हैं।

स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि कोरोना महामारी से लेकर अब तक ई-कॉमर्स, डिजिटल मार्केटिंग, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन एजुकेशन तथा वर्क फ्रॉम होम की प्रवृत्ति, बढ़ते हुए इंटरनेट के उपयोगकर्ता, देशभर में डिजिटल इंडिया के तहत सरकारी सेवाओं के डिजिटल होने से अमेरिकी टेक कंपनियों सहित दुनिया की कई कंपनियां भारत में स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि तथा रिटेल सेक्टर के ई-कॉमर्स बाजार की संभावनाओं को हासिल करने के लिए निवेश के साथ आगे बढ़ी हैं। राष्ट्रपति शी जिनपिंग की जीरो कोविड पॉलिसी नीति के कारण मार्च से लेकर मई, 2022 तक चीन के कई शहरों में आंशिक अथवा पूर्ण लॉकडाउन के कारण चीन में विकास दर घट गई है। ऐसे में चीन में कार्यरत कई कंपनियां चीन से अपना कारोबार और निवेश समेट कर जिन विभिन्न देशों का रुख कर रही हैं, उनमें भारत भी पहली पंक्ति में है।

अब चालू वित्त वर्ष 2022-23 में और अधिक प्रभावी कारणों से एफडीआई बढ़ने की संभावनाएं बढ़ गई हैं। उल्लेखनीय है कि 23 मई को टोक्यो में प्रधानमंत्री मोदी ने जापानी कंपनियों के शीर्ष अधिकारियों एवं सीईओ के साथ गोलमेज बैठक में कहा कि वैश्विक एफडीआई में मंदी के बावजूद भारत रिकॉर्ड विदेशी निवेश प्राप्त कर रहा है। उन्होंने कहा कि भारत निवेश अनुकूल अवसरों, आर्थिक सुधारों, नवाचार और तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाला देश है। मोदी ने भारत-जापान औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता भागीदारी (आईजेआईसीपी), राष्ट्रीय अवसंरचना पाइप लाइन (एनआईपी), उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना और सेमीकंडक्टर नीति जैसी पहलों और भारत के मजबूत स्टार्टअप परिवेश पर भी प्रकाश डाला। याद किया कि मार्च, 2022 में जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा की भारत यात्रा के दौरान दोनों देशों ने अगले पांच वर्षों में 5 हजार अरब जापानी येन के निवेश का महत्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया है। इस गोलमेज बैठक के बाद जापान की कंपनियों और निवेशकों से भारतीय प्रौद्योगिकी, ऊर्जा, वित्त और अनुसंधान एवं विकास जैसे क्षेत्रों में निवेश की संभावनाएं आगे बढ़ी हैं।

महत्वपूर्ण है कि 24 मई को अमेरिका, भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया के रणनीतिक मंच क्वाड के दूसरे शिखर सम्मेलन में चारों देशों ने जिस समन्वित शक्ति का शंखनाद किया है और बुनियादी ढांचे पर 50 अरब डॉलर से अधिक रकम लगाने का वादा किया है, उससे क्वाड भारत के उद्योग-कारोबार के विकास में मील का पत्थर साबित हो सकता है। साथ ही इससे भारत की ओर एफडीआई का प्रवाह बढ़ेगा। अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ हुई द्विपक्षीय बैठकों के साथ-साथ अमेरिका की अगुवाई में बनाए गए 13 देशों के संगठन हिंद-प्रशांत आर्थिक फ्रेमवर्क, (आईपीईएफ) में भारत को भी शामिल किया गया है, उससे भारत आईपीईएफ देशों के लिए विनिर्माण, आर्थिक गतिविधि, वैश्विक व्यापार और नए निवेश का महत्वपूर्ण देश बन सकता है। इनके अलावा इसी वर्ष यूरोपीय देशों के साथ किए गए नए आर्थिक समझौतों और नए मुक्त व्यापार समझौतों के क्रियान्वयन से जहां भारत का विदेश व्यापार बढ़ेगा, वहीं भारत में विदेशी निवेश भी बढ़ेगा।

इतना ही नहीं, जिस तरह से भारत की हरित ऊर्जा और खाद्य सुरक्षा के संबंध में सकारात्मक परिदृश्य दुनिया में आगे बढ़ रहा है, उससे भी एफडीआई का प्रवाह भारत की ओर बढ़ रहा है। भारत में हरित हाइड्रोजन, जैव ईंधन सम्मिश्रण और वैकल्पिक स्रोतों से जैव ईंधन की खोज और उत्पादन पर विशेष जोर दिया जा रहा है। भारत हरित ऊर्जा क्षेत्र में अग्रणी बनने को तैयार है। भारत ने 20 प्रतिशत एथनॉल मिश्रण के लक्ष्य को पाने की समय सीमा को 2030 से घटाकर 2025 कर दिया है। इस समय देश के लिए एफडीआई प्राप्त करने में कृषि क्षेत्र की भी अहम भूमिका है। दुनियाभर में भारत द्वारा उपलब्ध कराई गई खाद्य सुरक्षा का स्वागत किया जा रहा है, जिसमें कृषि क्षेत्र में भी विदेशी निवेश तेजी से बढ़ रहा है।

यदि हम चालू वित्त वर्ष 2022-23 में पिछले वित्त वर्ष के तहत प्राप्त किए गए 83.57 अरब डॉलर के एफडीआई से अधिक की नई ऊंचाई चाहते हैं तो जरूरी होगा कि वर्तमान एफडीआई नीति को और अधिक उदार बनाया जाए। जरूरी होगा कि देश में लागू किए गए आर्थिक सुधारों को तेजी से क्रियान्वयन की डगर पर आगे बढ़ाया जाए। जरूरी होगा कि डिजिटल अर्थव्यवस्था की विभिन्न बाधाओं को दूर करके इसका विस्तार किया जाए। एफडीआई बढ़ाने के लिए आत्मनिर्भर भारत अभियान और मेक इन इंडिया को सफल बनाना होगा। बदली हुई वैश्विक व्यापार व कारोबार की पृष्ठभूमि में भारत द्वारा यूएई और ऑस्ट्रेलिया के साथ एफटीए को मूर्तरूप देने के बाद अब यूरोपीय संघ, ब्रिटेन, कनाडा, खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) के छह देशों, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका और इस्राइल के साथ तेज गति से एफटीए वार्ताओं को पूरा करके एफटीए को शीघ्रतापूर्वक लाभप्रद आकार दिया जाना होगा।

भ्रामक विज्ञापनों पर नकेल

सिद्धार्थ शंकर

सेंट्रल कंज्यूमर प्रोटेक्शन अथॉरिटी ने विज्ञापनों के लिए नए दिशा-निर्देश जारी किए हैं। गाईडलाइन के मुताबिक अब भ्रामक विज्ञापनों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। अथॉरिटी ने सरोगेट एडवर्टाइजमेंट पर भी प्रतिबंध लगाया है। इस फैसले का उद्देश्य पारदर्शिता लाना है। नए दिशा निर्देश तत्काल प्रभाव से लागू हो गए हैं। यदि विज्ञापनों में दी गई जानकारी प्रोडक्ट में नहीं पाई जाती है, तो उन विज्ञापनों को भ्रामक विज्ञापन माना जाएगा। जो विज्ञापन उनके डिस्क्लेमर से भिन्न होते हैं, उन्हें भी भ्रामक विज्ञापन माना जाएगा। इसके अलावा, यदि कोई सेलिब्रिटी किसी विज्ञापन में कुछ दावा कर रहा है और वह सही नहीं पाया जाता है तो वह विज्ञापन भी भ्रामक विज्ञापन श्रेणी के अंतर्गत आता है।

पहले समझते हैं कि सरोगेट विज्ञापन क्या होता है? दरअसल अक्सर टीवी पर किसी शराब, तंबाकू या ऐसे ही किसी प्रोडक्ट का ऐड देखा होगा, जिसमें प्रोडक्ट के बारे में सीधे न बताते हुए उसे किसी दूसरे ऐसे ही प्रोडक्ट या पूरी तरह अलग प्रोडक्ट के तौर पर दिखाया जाता है। जैसे शराब को अक्सर सोडे के तौर पर दिखाया जाता है। गुटखा के प्रचार के लिए इलायची का सहारा लिया जाता है। खानपान हो, प्रसाधन, चिकित्सा, घरेलू साजो-सामान या जीवन से जुड़ी दूसरी चीजें, मीडिया में उनका बढ़-चढ़ कर विज्ञापन किया जाता है। हर उत्पाद गुणवत्ता में अपने को दूसरे से बेहतर बताता है। इसके लिए नामचीन हस्तियों की मदद ली जाती है, ताकि आम उपभोक्ता का उत्पाद संबंधी दावों पर भरोसा मजबूत हो। मगर अनेक परीक्षणों और जांचों में पाया गया कि विज्ञापन में किए गए दावे हकीकत से काफी दूर होते हैं। कई बार उन वस्तुओं के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव भी देखे गए हैं। इसी के मद्देनजर उपभोक्ता कानून में बदलाव किया गया। अब भ्रामक विज्ञापन देने वाली कंपनियों के साथ-साथ विज्ञापन करने वाली हस्तियों को भी दंड का भागी बनाया जा सकता है। वैश्वीकरण और बाजारीकरण के इस दौर में विज्ञापन का प्रभाव समाचार पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन के साथ डिजिटल मीडिया में भी तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में भ्रामक विज्ञापन भी धड़ल्ले से दिखाए जा रहे हैं। यही वजह है कि शराब-गुटखा का सेवन करने, छरहरा और आकर्षक बनाने, यौन शक्ति बढ़ाने जैसे भ्रामक विज्ञापनों की बाढ़-सी आ गई है। एक सर्वे के मुताबिक, देश में एक आम आदमी रोजाना करीब 3 घंटे टीवी देखता है और इस दौरान करीब 600 विज्ञापनों को चाहे-अनचाहे देख डालता है। इसके अलावा पत्रिकाओं, अखबारों, सिनेमा, इंटरनेट के विविध जरियों और सड़क किनारे लगे बड़े-बड़े होर्डिंग्स के माध्यम से भी सैकड़ों विज्ञापन उसकी आंखों के सामने से गुजरते हैं। वे उसके जेहन में कहीं जाकर अटक जाते हैं, जिन्हें कोई मशहूर हस्ती, जैसे फिल्म अभिनेता और मशहूर खिलाड़ी किसी बड़े दावे के साथ पेश कर रहा होता है। यही भरोसा विभिन्न उत्पाद बनाने वाली कंपनियां तलाश करती हैं और इसी के लिए वे हस्तियों को अपने विज्ञापनों में लाने के लिए करोड़ों खर्च करती हैं। देश में विज्ञापनों पर खर्च हो रहे सालाना 45 हजार करोड़ रुपए में से ज्यादातर हिस्सा ये मशहूर हस्ती ऐसे दावों के बहाने ले जाती हैं, पर क्या हो अगर वे दावे गलत निकल जाएं? क्या सितारे या मशहूर हस्तियां तब इस संबंध में अपनी कोई जिम्मेदारी वहन करेंगी? अमेरिका में फेडरल कंज्यूमर एक्ट ऐसे भ्रामक विज्ञापनों के लिए संबंधित हस्तियों को भी दोषी मानकर कार्रवाई की इजाजत देता है। कुछ ऐसे ही कानून चीन, जापान और दक्षिण कोरिया में भी हैं, जहां गुमराह करने वाले या धोखाधड़ी वाले विज्ञापनों में दिखने वाली हस्तियां भी कानून के दायरे में आती हैं और दोष साबित होने पर सजा की पात्र होती हैं। इसलिए भारत में भी ऐसा किया जाना जरूरी है।

विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस

डॉ. अरविन्द प्रेमचंद जैन

विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस बुजुर्गों के साथ दुर्व्यवहार की समस्या से निपटने के लिए वरिष्ठ नागरिकों, उनकी देखभाल करने वालों और सरकारों को एक साथ लाता है। इस दिन का उद्देश्य बड़ों के शारीरिक, भावनात्मक और वित्तीय शोषण की समस्या पर वैश्विक ध्यान केंद्रित करना है।

विश्व बुजुर्ग दुर्व्यवहार जागरूकता दिवस हर साल 15 जून को विश्व स्तर पर मनाया जाता है। यह दिन बुजुर्ग लोगों के साथ दुर्व्यवहार और पीड़ा के विरोध में आवाज उठाने के लिए मनाया जाता है। इस दिन का मुख्य उद्देश्य दुनिया भर के समुदायों को बुजुर्गों के दुर्व्यवहार और उपेक्षा को प्रभावित करने वाली सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और जनसांख्यिकीय प्रक्रियाओं के बारे में जागरूकता पैदा करके दुर्व्यवहार और उपेक्षा की बेहतर समझ को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान करना है।

संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव 66/127 के परिणामस्वरूप इस दिवस के आयोजन की शुरुआत हुई थी। जैसे-जैसे दुनिया में बुजुर्गों की आबादी बढ़ रही है, वैसे-वैसे उनके साथ दुर्?यवहार की घटनाएं भी बढ़ रही हैं। यह एक गंभीर सामाजिक बुराई है जो मानव अधिकारों को प्रभावित कर रही है। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र भी जागरूकता के जरिए इसे रोकने के लिए प्रयासरत है।

समाज की विद्रूपता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अब ज्यादातर घरों में बेटे, बेटियों को अपने बूढ़े मां-बाप बोझ मानने लगे हैं। यह बात महज खयाली नहीं, एक हकीकत है। एक सव्रे में पाया गया है कि 35 फीसद लोगों को बुजुर्गों की सेवा करने में अब खुशी महसूस नहीं होती।

बुजुर्गों को घर में नहीं रखना चाहते 29 फीसद लोग

एक चौथाई लोगों को बुजुर्गों की देखरेख करने में निराशा और कुंठा होती है। 29 फीसद लोग अपने बुजुर्गों को घर में रखने के बजाय वृद्धाश्रम में रखना पसंद करते हैं। 25 फीसद लोगों को बुजुर्गों के व्यवहार से होती है फ्रस्टेशन

भारत में बुजुर्गों खासकर 60 वर्ष या उससे अधिक की उम्र वाले लोगों की आबादी में 2050 तक करीब 20 फीसद का इजाफा हो सकता है। 25 फीसद लोगों को बुजुर्गों के व्यवहार से निराशा और फ्रस्टेशन होती है। यह हालात है टीयर-1 और टीयर-2 जैसे शहरी समाज का। 29 फीसद लोगों ने बुजुर्गों की सेवा को मध्यम से गंभीर महसूस किया जबकि 15 लोगों ने इसे बोझ माना।

देश में एक चौथाई बुजुर्ग अकेले रहने को मजबूर मां-बाप बड़े अरमानों से बच्चों को पढ़ा लिखाकर काबिल बनाने की कोशिश करते हैं। लेकिन हैरानी तब होती है जब बुढ़ापे में ये ही बच्चे मां-बाप को उनके हाल पर अकेला छोड़ देते हैं। पिछले वर्ष दिल्ली के एक गैर सरकारी संगठन एजवेल फाउंडेशन ने देश के 20 राज्यों के 10 हजार बुजुर्गों पर एक सर्वेक्षण किया था। इसकी रिपोर्ट डराने वाली है। रिपोर्ट के मुताबिक, 23.44 फीसद यानी देश का का हर चौथा बुजुर्ग देश में अकेला रहने को मजबूर है। ऐसा भी नहीं कि यह बुराई शहरों तक सीमित है। रिपोर्ट कहती है कि 21.38 फीसद बुजुर्ग गांवों में जबकि 25.3 फीसद शहरों में अकेले रह रहे हैं।

वैज्ञानिक नजरिये से देखें तो बुढ़ापा एक अनिवार्य शारीरिक आवस्था है, ऐसे में युवाओं को एक बात बड़ी गहराई से बैठा लेनी होगी कि उन्हें भी समय के इस चक्र के गुजरना होगा। ऐसे में युवा पीढ़ी के सामने सामाजिक व्यवस्था को बरकरार रखने की बड़ी चुनौती है। युवाओं को बुजुर्गों की सेवा के संस्कार को बनाए रखना होगा। साथ ही आने वाली पीढ़ी को बताना होगा कि बुजुर्ग बोझ नहीं हैं। आदर, सम्मान और सेवा उनका अधिकार है, इससे उन्हें वंचित नहीं किया जा सकता है। नई पीढ़ी को यह भी बताना होगा कि बुजुर्गों का तिरस्कार एक अपराध है।

पाक में मुशर्रफ की वापसी का पेचोखम

जनरल परवेज़ मुशर्रफ़ की वापसी का रास्ता क्या साफ होने लगा है? पाकिस्तान में इसकी कयासकारी होने लगी है। उसकी वजह पाकिस्तान के प्रतिरक्षा मंत्री ख्वाज़ा आसिफ का बयान है, जिसमें उन्होंने कहा था कि पूर्व राष्ट्रपति जनरल परवेज़ मुशर्रफ की वापसी से शासन को कोई एतराज़ नहीं है। ऐसा नहीं लगता कि वे वतन आयेंगे, तो किसी क़िस्म की रुकावट होगी। रक्षा मंत्री ख्वाज़ा आसिफ ने जनरल परवेज़ मुशर्रफ के परिवार के हवाले से मिली जानकारी के आधार पर कहा कि उन्हें एमाइलॉयडोसिस जैसी बीमारी है, जो उनके किडनी, लीवर व हृदय को प्रभावित कर चुकी है। उनकी हालत अच्छी नहीं है, और वे वतन लौटने के ख्वाहिशमंद हैं। प्रतिरक्षा मंत्री ख्वाज़ा आसिफ के इस बयान से पहले पाकिस्तान में जुम्मे के रोज़ यह अफवाह ज़ोरों की उड़ी थी कि जनरल साहब दुनिया में नहीं रहे। मगर, इसके बाद सरकार के मंत्री के आधिकारिक बयान ने अफवाहों पर विराम लगा दिया।

जनरल परवेज़ मुशर्रफ 2016 से दुबई में हैं। उनसे अचानक सत्तारूढ़ नवाज़ शरीफ की पार्टी मुस्लिम लीग (एन) की सहानुभूति क्यों हो गई? इस सवाल से पाकिस्तान के विश्लेषक भी वाबस्ता हैं। कारगिल युद्ध में पाकिस्तान के मुंह की खाने के बाद 12 अक्तूबर 1999 को जनरल परवेज़ मुशर्रफ को हटाना नवाज़ शरीफ ने तय कर लिया था, मगर सेना के समीकरण की वजह से शरीफ स्वयं अपनी सत्ता से हाथ धो बैठे थे। उसके बाद से कभी मुशर्रफ से नवाज़ शरीफ के अच्छे रिश्ते नहीं बन पाये थे। संजोग देखिये, पाक अदालत के आदेश की वजह से नवाज़ शरीफ लंदन में निर्वासन में हैं, बीमार हैं, और वतन वापसी के ख्वाहिशमंद हैं। क्या ऐसा तो नहीं कि दोनों निर्वासित व गंभीर रूप से बीमार नेताओं की वतन वापसी के लिए 'पहले आप-पहले आप' के सूरतेहाल बनाये जा रहे हैं?

जनरल परवेज़ मुशर्रफ की वापसी कहीं न कहीं पाक सेना की अस्मिता और सम्मान से भी जुड़ा हुआ है। सेना में अब भी परवेज़ मुशर्रफ के चाहने वाले जनरलों की कमी नहीं है। प्रधानमंत्री शहबाज़ शरीफ इसी बहाने सेना के उन जनरलों का भरोसा जीतना चाहते हैं, जो परवेज़ मुशर्रफ के कैंप के माने जाते रहे। हालांकि परवेज़ मुशर्रफ के समय थ्री स्टार जनरलों की जो चौकड़ी थी, वह अब सेवा में भी नहीं है। जनरल अहसानुल हक़, जनरल अज़ीज़ ख़ान, मोहम्मद अहमद और शाहिद अज़ीज़- ये वो चार जनरल थे, जिन्होंने कारगिल युद्ध की योजना बनाने में जनरल परवेज़ मुशर्रफ का साथ दिया था।

जनरल मुशर्रफ ने पाकिस्तान में सत्ता हरण दो बार किया था। 3 नवंबर 2007 को तत्कालीन राष्ट्रपति मुशर्रफ ने 1973 के संविधान को सस्पेंड कर इमरजेंसी आयद की थी। उस समय मुख्य न्यायाधीश इफ्तिख़ार मुहम्मद चौधरी के कामकाज पर ही अंकुश नहीं लगाया, बल्कि बड़ी अदालत के 61 जजों को पंगु-सा बनाकर रख दिया था। जनरल परवेज़ मुशर्रफ देश के राष्ट्रपति भी थे, और सेना प्रमुख भी। 28 नवंबर 2007 को उन्होंने सेना प्रमुख के पद से अवकाश की घोषणा की और जनरल अशफ़ाक परवेज़ कियानी को चार्ज दिया। उसके अगले दिन 29 नवंबर 2007 को उन्होंने सिविलियन राष्ट्रपति पद की शपथ ले ली। 15 दिसंबर 2007 को राष्ट्रपति मुशर्रफ ने इमरजेंसी हटाने की घोषणा की थी, उसके बाद का नज़ारा दिलचस्प था। इमरजेंसी हटने के बाद सुप्रीम कोर्ट, हाईकोर्ट और संघीय शरिया कोर्ट के जजों ने दोबारा से शपथ ली थी।

यह रोचक है कि मुशर्रफ ने 1999 में जो सत्ता पलट की, उससे संबंधित मामला उस विशेष अदालत में नहीं चला था। मई 2000 में पाकिस्तान की सर्वोच्च अदालत ने आम चुनाव का आदेश दिया। 20 जून 2001 में जनरल मुशर्रफ ने तत्कालीन राष्ट्रपति रफीक तरार को पद से हटाकर उसपर आसीन हो गये और 18 अगस्त 2008 तक राष्ट्रपति बने रहे। इस पद को वैध बनाने के वास्ते मुशर्रफ ने अप्रैल 2002 में मतसंग्रह भी करा लिया था। अक्तूबर 2002 में आम चुनाव हुए, जिसमें मुशर्रफ को समर्थन देने वाली मुत्तहिदा मज़लिस ए अमाल पार्टी बहुमत में आ गई, उन्होंने समय-समय पर कठपुतली प्रधानमंत्री नियुक्त किये। पूरे नौ साल पाकिस्तान का सैनिक शासन मनमर्जी से सत्ता चलाता रहा।

25 मार्च 2008 को पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी सत्ता में आ चुकी थी। हालात ऐसे बने कि उसके छह माह बाद, 18 अगस्त 2008 को नौ साल के शासन के बाद जनरल परवेज़ मुशर्रफ ने अपने पद से अवकाश लेने की घोषणा की। इससे पहले मुशर्रफ के विरुद्ध मामला कोर्ट में जा चुका था। 31 जुलाई 2009 को पाक सुप्रीम कोर्ट ने यह व्यवस्था दी कि परवेज़ मुशर्रफ ने 3 नवंबर 2007 को जिस तरह से इमरजेंसी आयद की थी, और संविधान को सस्पेंड किया था, वह अवैध था। लगभग साढ़े चार साल की अदालती लुका-छिपी के बाद 19 नवंबर 2013 को पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज़ की तत्कालीन सरकार ने तीन सदस्यीय स्पेशल कोर्ट में मुशर्रफ़ के खिलाफ देशद्रोह समेत पांच आरोप दाखिल किये थे।

यह ध्यान में रखने की बात है कि सेना के जनरल पांच वर्षों तक कोर्ट पर लगातार दबाव बनाते रहे कि जनरल मुशर्रफ पर आरोपों की सुनवाई मिल्ट्री कोर्ट में हो। इस बीच जनरल मुशर्रफ गंभीर रूप से बीमार पड़ चुके थे। 18 मार्च 2016 को कोर्ट ने उन्हें इस वायदे के साथ दुबई जाने की अनुमति दी कि वे कुछ हफ्तों में इलाज के बाद वतन लौट आएंगे। मगर, ऐसा कुछ हुआ नहीं। विशेष अदालत को उन्हें भगोड़ा घोषित कर सज़ा वाली कार्यवाही आगे बढ़ानी पड़ी। मुशर्रफ, दुबई इलाज के बहाने गये, वह भी एक सोची-समझी रणनीति थी, क्योंकि पाकिस्तान और संयुक्त अरब अमीरात से प्रत्यर्पण संधि नहीं है।

पुष्परंजन

17 दिसंबर 2019 को विशेष अदालत परवेज़ मुशर्रफ को मृत्युदंड सुना चुकी है। मुशर्रफ को सज़ा-ए-मौत को पाक सेना ने अपना अपमान मान लिया था। तब पाक सेना का मीडिया विंग 'आईएसपीआर' ने अपने आधिकारिक बयान में कहा था कि जनरल मुशर्रफ कभी देशद्रोही नहीं थे। स्पेशल कोर्ट का यह फैसला बहुत ही दुखद है। अब सवाल यह है कि परवेज़ मुशर्रफ वतन वापिस आते हैं, तो क्या उन्हें सज़ा-ए-मौत दी जा सकती है? पाक संविधान का अनुच्छेद-45 वहां के राष्ट्रपति को यह अधिकार देता है कि वे मृत्युदंड को क्षमादान में परिवर्तित कर दें। इस्लामाबाद में जो लोग सत्ता के गलियारे की टोह लेते हैं, उन्होंने संकेत दिया है कि क्षमादान की एक अर्जी जनरल मुशर्रफ़ की ओर से राष्ट्रपति कार्यालय को भेजी जा चुकी है। पाकिस्तान के राष्ट्रपति डॉ. आरिफ अल्वी का जिस समय क्षमादान पर हस्ताक्षर होता है, मुशर्रफ़ की पाकिस्तान वापसी पर मुहर लग जाएगी।

नगर परिषद चुनाव को लेकर मचने लगा घमासान

भाजपा हो या कांग्रेस, जिनके जिम्मे चुनाव लड़ाना वे ही टिकट की दौड़ में सबसे आगे

दोनों ही दलों सहित बड़ी संख्या में निर्दलीय भी लगे चुनावी तैयारी में

माही की गूंज, भानपुरा। साहिल अगवान

नगर परिषद भानपुरा के चुनाव को लेकर संभावित उम्मीदवारों की बड़ी फौज तैयार हो रही है। हर एक दल में कई कई कार्यकर्ता अपनी उम्मीदवारी जता रहे पार्टी व संगठन में उच्च पदों पर बैठे बड़े नेताओं की सांसे अटकी हुई है उनके सामने कहीं-कहीं कार्यकर्ता अपनी प्रबल दावेदारी लेकर सामने आ रहे हैं। नगर परिषद के चुनाव के लिए फार्म भरने का कार्य शुरु हो गया है। फार्म भरने कि अंतिम तारिख 18 जुन है। पर अभी तक अधिकृत प्रत्याक्षियो कि सुची न भाजपा न कांग्रेस जारी नही कर सकी है, भाजपा ओर कांग्रेस के पर्यवेक्षक आकर रायशुमारी कर चुके है। दोनो पार्टियो मे 15 ही वार्डो मे कई-कई दावेदारो ने अपनी दावेदारी पेश की है, भाजपा मे पार्टी के अधिकांश पदाधिकारी ही टिकिट मांग रहे है, या तो खुद या परिजन जिनको टिकिट वितरण करना वे ही टिकिट कि दौड़ मे है, तो कार्यकर्ता जो इस इन्तजार मे है कि टिकिट मिलेगा पर जिला व मण्डल के पदाधिकारी खुद टिकिट मांग रहे हैं। कई ने तो अधिकृत उम्मीदवार की घोषणा के पहले ही प्रचार शुरु कर दिया है। इनमे कई पदाधिकारी या उनके परिजन भाजपा की ओर से लगातार दो से तीन चुनाव लड़ चुके हैं, फिर भी टिकिट कि दौड़ मे है। इससे कहीं निष्ठावान कार्यकर्ता निराश हो रहें हैं। उन्होने पार्टी हाईकमान से पदाधिकारियो को जो एक से अधिक बार चुनाव लड़ चुके हैं उन्हे टिकिट न देने कि मांग की है। क्षेत्रिय विधायक देवीलाल धाकड़ से भी भाजपा कार्यकर्ताओ ने पार्टी को समर्पित निष्ठावान को टिकिट देने कि मांग की है। कार्यकर्ताओं का कहना कि संगठन की जवाबदारी जिनके पास है उन्हे टिकिट न दिया जाये। पार्टी मे एक पद एक व्यक्ती का नियम जो लागू है वह नगर परिषद चुनावो मे भी लागु हो। जिनको टिकिट वितरण करना है उन्हें संगठन में चाहिए कि अच्छे ओर जीतने वाले कार्यक्रताओं की तलाश करके अपनी पार्टी कि परिषद काबिज करे, व तलाश करने के बजाय अपने पद का फायदा उठाकर खुद ही अपनी टिकिट कि पेरवी कर रहे हैं ऐसे में भाजपा व कांग्रेस की विचारधारा ऐसे संगठन के पदाधिकारी खूंटी पर टांगने में भी देर नहीं कर रहै हैं व अपने प्रभाव का इस्तेमाल खुद के हित जमकर कर रहें हैं। कांग्रेस में भी पुर्व मंत्री सुभाष सोजतिया के प्रति जो निष्ठावान व समर्पित है उन्हें ही टिकिट मिलने कि सम्भावन नजर आ रही है फिर चाहे वे चुनाव जीते या हारे, कांग्रेस मे कहीं दमदार ओर लोकप्रिय उम्मीदवार हैं परन्तु उनका सोजतिया से तालमेल नहीं है होने के कारण टिकिट से वंचित रहेंगे। उनको या तो बेठना पड़ेगा या निर्दलीय चुनाव लड़ना पड़गा। दोनो पार्टियो मे निष्ठा पार्टी के बजाय व्यक्ती निष्ठा महत्वपुर्ण दिखाई दे रही है। विगत 15 वर्षो से भानपुरा क्षेत्र में कांग्रेस हर जगह सत्ता से बाहर है, इसका कारण अच्छे कार्यक्रताओ की उपेक्षा अब आम बात है, सिद्धांतों की दुहाई देने वाली भाजपा मे भी यही नजर आ रहा है। दोनो पार्टियो मे कहीं जिताऊ उम्मीदवार है, परन्तु उनका उनसे तालमेल नही जिनका सत्ता व संगठन मे दबदबा है। अगर कांग्रेस को सत्ता का वनवास खत्म करना है या भाजपा को सत्ता मे वापसी करना है तो लोकप्रिय ओर जिताऊ उम्मीदवारो को टिकिट देना होगा। नगर परिषद के आने वाले चुनाव में यह बात तो साफ है कि नगर के लगभग सभी वाद से कई कई उम्मीदवार चुनाव मैदान में होंगे जो भाजपा व कांग्रेस के लिए बड़ी परेशानी खड़ी करने वाले हैं, क्योंकि विगत वर्षो से भाजपा व कांग्रेस से नगर की जनता को जो अपेक्षा थी उस पर दोनों ही राजनीतिक दल खरे नहीं उतरे हैं। नगर वासियों का यह भी मानना है कि यदि कोई राजनीतिक दलों से हटके दमदार मोर्चा सामने आता है तो फिर दोनों ही पार्टियों के लिए मुसीबत खड़ी होने वाली है।

दो माह से नही मिल रहा पानी, कलेक्टर के पास पहुंचे वार्डवासी

माही की गुंज, शाजापुर।

नगर पालिका के वार्ड क्र. 29 की नीलकंठ कॉलोनी में पाइप लाईन खराब होने से विगत 2 माह से ऊपर हो गए लेकिन पानी की समस्या ठीक नहीं हुई। जिसके चलते रहवासी पानी की समस्या से परेशान हैं। पानी की समस्या को लेकर वार्डवासी कलेक्टर से मिलने पहुंचे लेकिन कलेक्ट्रेट में कलेक्टर के उपस्थित नही होने से आवेदन आवक-जावक में दिया गया। वही एक और आवेदन नगर पालिका के कार्यपालन अधिकारी राकेश चौहान को दिया गया।

वार्डवासियों ने बताया कि, नीलकंठ कॉलोनी में पानी की पाइप लाईन का स्थाई समाधान करवाए। विगत 2 माह से ऊपर हो गए वार्डवासियों की पानी की समस्या हल नहीं हुई। नगर पालिका से टैंकर भी बार-बार फोन करके बुलाना पड़ता है लेकिन वह भी एक अनार सो बीमार और राजनीतिक भेदभाव के चलते बंट जातें हैं। वही राजेश सिसनोरिया ने अनुरोध किया की सभी वार्डवासियों को टैंकर से और लाइन से बिना भेदभाव पानी वितरण किया जाए। जिनके घरों में पानी के टैंक बने है उनमें भी पानी डाला जाए। बुजुर्ग, व्यवसाय करने वाले, जॉब करने वाले और चुनाव के चलते कर्मचारी घर से दूर है तो टैंकर से असमय पानी भरने में असमर्थ है। आवेदन में वार्ड के 50 घरों के सभी रहवासीयो ने हस्ताक्षित आवेदन नगर पालिका प्रशासक के नाम दिया गया। जिस पर कार्यवाही करने के निर्देश भी अधिकारी ने दिए।

वही वार्डवासियों की मांग है कि, नल नही आ रहे थे तो पानी टैक्स 2 माह का माफ किया जाए, साथ ही पानी के टेंकरो से घर-घर पानी डाला जाए जब तक पाइप लाइन ठीक नही होती।

आवेदन देते समय वार्ड के समाजसेवी राजेश सिसनोरिया, रिटायर्ड कर्मचारी श्रीमती क्षिप्रा विश्वास, श्रीमती राजकुवर, योगेश मालवीय, श्रीमती धनकुवर, श्रीमती सगुन मालवीय, श्रीमती राधा परिहार आदि मौजूद रहे।

भाजपा का इंदौर के बाद रतलाम में महापौर प्रत्याशी नाम हुआ तय

भोपाल।

निकाय चुनाव के लिए बचे तीन में से दो और महापौर उम्मीदवारों की घोषणा भाजपा ने बुधवार को कर दी। पार्टी ने इंदौर से पुष्यमित्र भार्गव और रतलाम से प्रहलाद पटेल के नामों पर मुहर लगा दी है। अब केवल ग्वालियर के महापौर प्रत्याशी की घोषणा बाकी है। वहां से पार्टी की चर्चित नेता माया सिंह और सुमन वर्मा के नामों पर मंथन चल रहा है।

कांग्रेस भी 15 नगर निगमों में महापौर प्रत्याशियों की घोषणा कर चुकी है, लेकिन रतलाम सीट अभी भी बाकी है। बीजेपी ने अब तक घोषित 15 में से 7 महिलाओं को टिकट दिया है। देवास से गीता अग्रवाल, सागर से संगीता तिवारी, खंडवा से अमृता यादव, मुरैना से मीना जाटव, कटनी से ज्योति दीक्षित, बुरहानपुर से माधुरी पटेल और भोपाल से मालती राय को उम्मीदवार बनाया गया है।

इस बीच, इंदौर से बीजेपी के महापौर प्रत्याशी के रूप में सुबह नाम फाइनल होने के बाद पुष्यमित्र भार्गव ने हाई कोर्ट के अतिरिक्त महाधिवक्ता पद से इस्तीफा दे दिया। पुष्यमित्र मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के सबसे युवा अतिरिक्त महाधिवक्ता चुने गए थे। इंदौर से कांग्रेस के महापौर प्रत्याशी विधायक संजय शुक्ला हैं, जिनके नामांकन में आज पूर्व मुख्यमंत्री व कांग्रेस नेता कमलनाथ भी शामिल हुए।

41 वर्षीय पुष्यमित्र भार्गव ने छात्र जीवन से राजनीतिक करियर की शुरुआत की थी। वे एबीवीपी से जुड़े रहे हैं। रतलाम से उम्मीदवार चुने गए प्रहलाद पटेल पार्षद रहे चुके हैं। मंथन के दौरान रतलाम जिले से पूर्व नगर निगम अध्यक्ष अशोक पोरवाल और पिछड़े वर्ग के नेता दिनेश राठौर के नामों पर भी विचार किया गया, लेकिन अंततः प्रहलाद पटेल के नाम पर मुहर लगी।

भाजपा ने 16 में से 13 उम्मीदवारों की घोषणा मंगलवार को कर दी थी। इंदौर, रतलाम और ग्वालियर के नाम फाइनल होने रह गए थे। इंदौर में कई दावेदार और कांग्रेस से विधायक संजय शुक्ला के प्रत्याशी होने की वजह से कल शाम तक किसी के नाम पर औपचारिक मुहर नहीं लग पाई थी। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने डॉक्टर निशांत खरे और मधु वर्मा के नाम पर विचार करने का सुझाव दिया था। दूसरी तरफ पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय ने विधायक रमेश मेंदोला का नाम आगे कर दिया था।

पुष्यमित्र भार्गव का नाम प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने प्रस्तावित किया। किसी एक के नाम पर सहमति न बन पाने से पार्टी ने 16 में से 13 प्रत्याशियों की घोषणा कर दी। इसके बाद इंदौर के विधायकों को भोपाल बुलाया गया और आपसी सहमति बनाने का प्रयास किया गया। उसके बाद पुष्यमित्र भार्गव के नाम पर अंतिम मुहर लग पाई।

अस्पताल अधीक्षक डॉ. मरावी पर नर्सों ने लगाए गंभीर आरोप

भोपाल।

राजधानी भोपाल के हमीदिया अस्पताल से एक बड़ी खबर सामने आई है। यहां अस्पताल के अधीक्षक डॉ. दीपक मरावी पर नर्सों ने अश्लीलता करने और धमकाने के आरोप लगाए हैं। अस्पताल की 50 से ज्यादा पीड़ित नर्सों ने इस मामले की लिखित शिकायत प्रदेश के चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग से की है।

नर्सों ने आरोप लगाया है कि, डॉ. मरावी शराब के नशे में धुत होकर नाइट ड्यूटी के समय कार्यरत नर्सों के चेंजिंग रूम में बिना दरवाजा खटखटाए घुस आते हैं। आरोप है कि वह चेंजिंग रूम में अश्लील हरकतें करते हैं। नर्सों ने शिकायत में 30 मई 2022 को हुई घटना का भी उल्लेख किया। उस दिन एक नर्स को ऑफिस के पास वाले कमरे में बुलाकर डॉ मरावी ने कथित तौर पर बलात्कार करने की कोशिश की।

लगाए बड़े आरोप

नर्सों ने पत्र में लिखा कि, डॉ. मरावी सीएल सैंक्शन करने के बहाने या ज्वाइनिंग करने से पहले ऑफिस में बुलाकर अश्लील बातें करते हैं और छूने का प्रयास करते हैं। नर्सों द्वारा विरोध करने पर डॉ. मरावी ने कथित तौर पर कहा, 'मेरा कुछ नहीं होने वाला, क्योंकि मुझे मुख्यमंत्री ने अधीक्षक बनाया है। मैं तेरी नौकरी खा जाऊंगा और कहीं जीने लायक नही छोड़ूंगा।'

विवादों में रह चुके हैं मरावी

वहीं इस मामले पर चिकित्सा शिक्षा मंत्री विश्वास सारंग ने कहा कि, मामला गंभीर है। इसकी जांच हमीदिया अस्पताल के बाहर के लोगों से कराई जाएगी। 10 दिन में जांच रिपोर्ट आएगी और उसके बाद ही कुछ कह पाऊंगा।

हमीदिया अस्पताल के अधीक्षक डॉ. दीपक मरावी पहले भी विवादों में रह चुके हैं। इसके पहले उन्होंने अस्प ताल में मीडिया के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने का आदेश जारी किया था। इसके अलावा दीपक मरावी के पिछले कार्यकाल के दौरान हनी ट्रैप समेत कई आरोप भी लगे थे।

कन्या शाला मतदान केंद्र पर पसरा गंदगी का साम्राज्य

माही की गुंज, अकोदिया मंडी।

नगर परिषद चुनाव होने जा रहे हैं और देश के प्रधानमंत्री स्वच्छता की ओर पूरी ताकत के साथ स्वच्छता अभियान चला रहे हैं। अकोदिया कन्या शाला स्कूल को वार्ड नंबर 11 का मतदान केंद्र बनाया गया है वहां के प्रधानाचार्य एवं वहां के कर्मचारी को वहां की गंदगी नहीं दिख रही है। कन्या शाला स्कूल का वार्ड नंबर 11 राठी मोहल्ला में सबसे पहले स्कूल का मेन गेट यही था लेकिन स्कूल प्रधानाचार्य एवं कर्मचारियों की मनमानी की वजह से मेन गेट बंद करके वहां पर टॉयलेट बनाया गया, जिसका उपयोग सिर्फ कर्मचारी ही करते हैं। जब बिल्डिंग का निर्माण नया किया गया तभी से टॉयलेट पहले से ही वहां बनाया गया था। लेकिन वहां के टॉयलेट की सफाई कर्मचारियों के द्वारा साफ-सफाई नहीं होने के कारण शिक्षकों व प्राचार्य ने अपने लिए मेन गेट पर टॉयलेट बना लिया, जोकि बिल्कुल गलत है। क्योंकि कर्मचारियों के द्वारा मेन गेट पर दिनभर ताला लगाकर रखते हैं क्योंकि उस जगह पर उन्होंने अपने लिए टॉयलेट बनाया है। इसलिए मेन गेट के सामने के रहवासियों के द्वारा गेट के सामने गंदगी फेंक दी जाती है एवं गेट के सामने किसी प्रकार की कोई साफ-सफाई सफाई कर्मचारी के द्वारा नहीं की जाती है। सिर्फ अपने सैलरी समय से कब आ रही है इस बात का ही सफाई कर्मचारी ध्यान रखते हैं न ही स्कूल में किसी प्रकार की साफ-सफाई रखते हैं। जब क्लास चलती है तभी किसी भी रूम में झाड़ू तक नहीं लग पाती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा जो स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है उस पर स्कूल के कर्मचारियों के द्वारा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। अब देखना यह है कि क्या मतदाता मतदान करने के लिए गंदगी में होकर जाएंगे...? या सिर्फ उसी दी सफाई की जाएगी।

वर्षा से जमा अतिक्रमण हटवाया

माही की गुंज, अकोदिया मंडी।

अकोदिया मंडी में बीते वर्षों से कंगन बाजार चौराहा पर बीच रोड पर भारमल हार्डवेयर के द्वारा अतिक्रमण कर रखा था। अकोदिया मंडी थाना प्रभारी ने कितनी ही बार उक्त दुकान संचालक को चेतावनी दी। लेकिन भारमल हार्डवेयर संचालक ने थाना प्रभारी ने दी हुई चेतावनी को नजरअंदाज किया। जब मंगलवार को नगर भ्रमण पर अकोदिया थाना प्रभारी लक्ष्मण सिंह देवड़ा निकले तब उन्होंने जाम की स्थिति को देखते हुए भारमल हार्डवेयर के संचालक को सामान हटाने को कहा, लेकिन हार्डवेयर संचालक के द्वारा काफी समय तक अनसुनी की। जिसके बाद टीआई देवड़ा ने वाहन बुलवाकर पूरा सामान भरवाया एवं अतिक्रमण हटवाया।

टीआई देवड़ा ने कहा, मुझे अगर वापस इस जगह अतिक्रमण दिखा तो मैं दुकान संचालक के ऊपर कार्रवाई करूंगा। कंगन बाजार चौराहा के कुछ दुकानदारों ने ऋषभ ट्रेडर्स की ओर भी इशारा किया एवं टीआई देवड़ा को बताया कि, इनके द्वारा भी बीच रोड पर वाहन लगाकर माल उतारा जाता हैं जिससे आवागमन में दिक्कत आती है। जिस पर थाना प्रभारी ने कहा, मैंने उनको समझा दिया है अगर नहीं माने तो उनके ऊपर भी कार्रवाई की जाएगी।

मंडी में किसान की मौत के बाद जागा प्रशासन

माही की गूंज, मंदसौर।

मंडी में पिकअप की चपेट में आने के बाद किसान की मौत हो जाने के बाद मंडी प्रशासन ने व्यवस्थाओं में बदलाव किया है। इसे आनन-फानन में मंगलवार से लागू भी कर दिया है। इधर मृतक किसान के परिजनों को आर्थिक सहायता देने के लिए कागजी प्रक्रियाओं का दौर भी जारी है। अब तक किराना ड्क्षजसों को रात में भी प्रवेश मिल जाता है लेकिन अब उन्हें भी रात बीतने का इंतजार करना होगा। रात 10 बजे बाद लहसुन के साथ ही किराना सहित किसी भी वाहन को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। वहीं किसानों को अपनी उपज का ढेर प्लेटफॉर्म में ही लगाना पड़ेगा। मंडी प्रशासन ने व्यवस्था में बदलाव को लेकर मंगलवार को लागू व्यवस्था के तहत दिनभर एलाउंस भी कराया, हालांकि किसान जगह मिलने पर खुले में ही उपज का ढेर लगा रहे है। इसलिए किराना का प्रवेश भी बन्द करना पड़ा।

मंडी में वर्तमान में लहसुन की अधिक आवक होने के कारण सिर्फ लहसुन का प्रवेश बैन रहता है। बाकी किराना का प्रवेश रात को भी जारी रहता है। ऐसे में किसान अपने वाहनों में ऊपर किराना और नीचे लहसुन लेकर मंडी में प्रवेश कर लेते है। सोमवार की रात में हुए हादसे में भी यही हुआ था। पिकअप में ऊपर किराना ड्क्षजस लोड थी और नीचे लहसुन। इसी कारण अब किराना ड्क्षजसों का भी रात में प्रवेश प्रतिबंधित कर दिया गया। उन्हें भी अब प्रवेश के लिए सुबह होने तक का इंतजार करना पड़ेगा। वहीं लहसुन की उपज लेकर पहुंचने वाले किसानों को अभी भी इंतजार करना पड़ रहा है। मंडी गेट के बाहर अभी भी कतारें लग रही है।

प्रांगण में ढेर पर नीलाम पर इसलिए लगाना पड़ी रोक

वर्तमान में प्लेटफॉर्म के अलावा खुले प्रांगण में लहसुन-प्याज के ढेर की भी नीलाम की व्यवस्था है। लेकिन अब बारिश का दौर है। ऐसे में यह व्यवस्था लागू की गई कि प्लेटफॉर्म में ही किसानों को उपज का ढेर लगाना होगा। खुले में नीलाम नहीं होगा। वहीं ऐसी स्थिति में प्लेटफॉर्म पर जिन व्यापारियों का खरीदा हुआ माल रखा है उनसे प्लेटफॉर्म खाली कराना भी मंडी प्रशासन के लिए कड़ी चुनौती होगा।

अब रात को नहीं दिया जाएगा प्रवेश

मंडी सचिव जगदीशसिंह परमार ने बताया कि व्यवस्था में बदलाव किया है। रात को मंडी खाली होने के बाद वाहनों को रात 10 बजे के बाद प्रांगण में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। गेट बंद कर दिए जाएंगे। सुबह ही गेट खुलेंगे। वहीं किसानों को अपनी उपज का ढेर प्लेटफॉर्म में लगाना होगा। तो ही नीलामी की जाएगी। वहीं व्यापारियों को प्लेटफॉर्म से माल हटाने के लिए नोटिए दिए जा रहे है।

न्यूज ब्रीफ

मालवा निमाड़ को जोड़ने वाला जामगेट मार्ग हुआ प्रारम्भ

माही की गूंज, खरगोन।

जिले की सीमा पर मण्डलेश्वर तहसील में मण्डेश्वर-महू मार्ग पर बना होल्करकालीन जामगेट मंगलवार से पुनः आम नागरिकों के लिए खोल दिया गया है। अब इस मार्ग से भी खरगोन-इंदौर पहुँचा जा सकता है। ज्ञात हो कि 7 जून से 13 जून तक जामगेट से मण्डलेश्वर-महू की ओर जाने पर प्रतिबंधित किया गया था। पर्यटन की दृष्टि से यह स्थान एमपीआरडीसी का रोड बन जाने के बाद से अत्यंत रमणीय होकर लोकप्रिय हो गया है। यहां से व्यावसायिक वाहन बहुत कम संख्या में लेकिन पर्यटक काफी संख्या में आने लगे हैं। होल्करकालीन जामगेट राज्य संरक्षित स्मारक होने से बन्द अवधि में अनुरक्षण एवं विकास कार्य किये जा रहे थे। अंतिम चरण में गेट से गुजरने वाली सड़क बनाना था। इस कारण इसे बंद किया गया था।

बारिश में कराता है अलौकिक अहसास

वैसे तो जामगेट की सौन्दर्यता को निहारने 12 महीने पर्यटकों का आना-जाना लगा रहता है। लेकिन बारिश के मौसम में इस क्षेत्र के लिए विशेष उपहार देखने में आता है। यहां न सिर्फ बारिश ही नहीं बल्कि बादल भी घाटियों में वनों से मिलने आते हैं। गहरी घाटी में बादलों का झुरमुट जब हवाओं के साथ ऊपर की ओर उठता है तो प्रकृति का अलौकिक अहसास कराता है। जामगेट मार्ग पर झरने भी कर्णप्रिय ध्वनि से पुकारने लगते हैं। खासकर सुबह-सुबह और अक्सर शाम के समय पर्यटक आन्नद लेते हैं।

सिंचाई में भी उपयोगी होंगे अमृत सरोवर

माही की गूंज, खरगोन। जिले में अमृत सरोवरों का निर्माण बड़ी तेजी से हो रहा है। जैसे- जैसे बारिश नजदीक आ रही है वैसे ही अमृत सरोवर भी बनकर तैयारी की ओर है कि बारिश के पानी को अपने मे समेट सकें। मंगलवार को जिला पंचायत सीईओ दिव्यांक सिंह ने खरगोन जनपद के पिपराटा, अकावलिया और सांईखेड़ा में बन रहे अमृत सरोवरों का निरीक्षण किया।

जिला पंचायत सीईओ ने बताया कि, अमृत सरोवरों में जल भराव अच्छी क्षमता में होगा। एक अमृत सरोवर में 10 हजार क्यूबिक मीटर पानी एकत्रित हो सकेगा। इस जल का उपयोग किसान सिंचाई में भी कर सकता है। जनपद सीईओ श्री राजेन्द्र शर्मा ने बताया कि एक अमृत सरोवर से लगभग 25 से 40 हे. भूमि सिंचित हो सकेगी। इसके अलावा अमृत सरोवरों से कई ट्यूबवेल, कुँए और हेण्डपम्प रिचार्ज हो पाएंगे। भ्रमण के दौरान सहायक यंत्री विनोद गंगवाल, मनरेगा पीओ श्याम रघुवंशी, उपयंत्री चौहान रेवा सहायक परियोजना अधिकारी मनरेगा सोनाली उपस्थित रहे।

खनिज विभाग ने एक जेसीबी व तीन ट्रैक्टर किये जप्त

माही की गूंज, खरगोन। खनिज विभाग द्वारा मंगलवार को ततपरता दिखाते हुए अवैध उत्खनन की शिकायत पर कार्यवाही की है। खनिज अधिकारी श्री सावन चौहान ने बताया मंगलवार को दिन में करीब 12 बजे मेनगांव थाना क्षेत्र के बरसलाय में जेसीबी से अवैध उत्खनन करने की शिकायत प्राप्त हुई। इसकी जानकारी के लिए खनिज अधिकारी ने तुरंत होमगार्ड जवान को मोटरसाइकिल से भेजा और इसके कुछ देर बाद स्वयं खनिज अधिकारी और खनिज इंस्पेक्टर रिना पाठक मौका स्थल पर पहुंचे। नहर के पास लगी छोटी पहाड़ी पर 1 जेसीबी मुरम की खुदाई करती पायी गयी वही दो ट्रैक्टर भी मुरम भरने के लिए खड़े थे। खनिज टीम में 1 जेसीबी ओर 2 ट्रैक्टर जप्त कर थाना मेनगांव की अभिरक्षा में खड़ा किया।

निरीक्षक की नजर से नही बच पाया स्टॉक

खनिज अधिकारी और निरीक्षक जब बरसलाय की कार्यवाही कर टीम पुनः खरगोन वापस की ओर रवाना हुई तभी खनिज निरीक्षक रिना पाठक की नजर शहर इंट्री पर ही पेट्रोल के पास खाली जगह पर रखे रेत के अवैध स्टॉक से एक ट्रक्टर रेत भर कर जाते देखा। उसे भी पकड़ कर थाना मेनगांव की अभिरक्षा में रखा में गया है। इस तरह मंगलवार को खनिज विभाग द्वारा की गई कार्यवाही में कुल 3 ट्रैक्टर 1 जेसीबी जप्त की गई।

आबकारी विभाग का तलाशी अभियान, ढाबों पर पसरा सन्नाटा

माही की गूंज, खरगोन।

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव 2022-23 के मद्देनज़र अवैध मदिरा के विरुद्ध चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत कलेक्टर कुमार पुरूषोत्तम के आदेश तथा सहायक आबकारी आयुक्त अभिषेक तिवारी के निर्देशानुसार आबकारी विभाग लगातार कार्यवाही कर रहा है। ज़िले के वृत्त महेश्वर, कसरावद व सनावद के संयुक्त आबकारी दल ने गत मंगलवार को महेश्वर नगर में स्थित होटल/ढाबों व अवैध मदिरा विक्रय के संदिग्ध स्थलों की सघनता से तलाशी की गई। जिसमें पूर्व में आबकारी दल द्वारा की गयी सतत कार्यवाही का असर देखने को मिला। कुछ होटल/ढाबे बंद मिले तो कुछ पर सन्नाटा पसरा रहा। नगर में संचालित महाकाली ढाबा, महेश्वर कॉटेज, इंडियन हेरिटेज होटल, मिडनाइट ढाबा, रॉयल पैलेस होटल, चस्का ढाबा, जलदेव ढाबा वर्मा ढाबा, भगवती ढाबा आदि पर आबकारी की बड़ी टीम द्वारा तलाशी की गई। अवैध मदिरा बरामद नहीं होने पर खाली तलाशी पंचनामा कार्यवाही वृत्त प्रभारी मोहनलाल भायल आबकारी उपनिरीक्षक द्वारा की गयी। आबकारी विभाग की इस कार्यवाही में पवन टिकेकर सहा. जि. आ.अधिकारी, आबकारी उपनिरीक्षक अजयपालसिंह भदौरिया, देवराज नगीना तथा वृत्तों के मुख्य आरक्षक व आरक्षकों का सराहनीय योगदान रहा।

पांच प्रकरण दर्ज कर 3 आरोपियों को किया गिरफ्तार

इसी प्रकार सहायक जिला आबकारी अधिकारी पवन टिकेकर के मार्गदर्शन में आबकारी दल ने बुधवार अलसुबह वृत सनावद के ग्राम अतरसुम्बा, बागदा, भूलगाँव नदी किनारे एवं संजय नगर सनावद में अबैध मदिरा विक्रेताओं के विरुद्ध कार्यवाही की गई। इस दौरान वृत प्रभारी आबकारी उपनिरीक्षक अजय पाल सिंह भदौरिया द्वारा म.प्र. आबकारी अधिनियम की धारा 34 (1) क,च के तहत 5 प्रकरण दर्ज कर 3 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। आबकारी विभाग ने अलग-अलग स्थानों से 45 पाव देशी मदिरा एवं 37 लीटर हाथभट्टी मदिरा जप्त कर लगभग 700 किलोग्राम महुआ लहान मौके पर नष्ट किया। जप्त मदिरा एवं महुआ लहान का बाजार मूल्य लगभग 41 हजार 500 रुपये है। कार्यवाही में आबकारी मुख्य आरक्षक धनसिंह कुबरे एवं आबकारी आरक्षक अशोक ज्ञानी का सराहनीय योगदान रहा।

कलेक्टर ने विद्यार्थियो को पढ़ाया व्यवहारिकता का पाठ

माही की गूंज, बड़वानी।

कलेक्टर शिवराजसिंह वर्मा, बुधवार को डाइट बड़वानी पहुंचकर जहॉ बीईओ, बीआरसी, संस्था के प्राचार्यो एवं जनशिक्षको को 17 जून को होने वाले स्कूल चले हम अभियान के बारे में विस्तार से बताते हुये प्रोत्साहित किया। वहीं संस्था में डीएलएड के विद्यार्थियो को भी व्यवहारिकता का पाठ पढ़ाया, जिससे वे अपनी मंजिल प्राप्त करते हुये कुशल शिक्षक सिद्ध हो सके।

इस दौरान कलेक्टर ने विद्यार्थियों को बताया कि, सफलता उसी के कदम चूमती है, जो समझदारी से पढ़ाई करता है एवं अपने विचार को कुशलता से व्यक्त करता है। जरूरत इस बात की है कि हम पढ़ाई को घण्टे के हिसाब से न करते हुये समझकर करें। क्योंकि समझकर की गई पढ़ाई ताउम्र याद रहती है और जब भी उसकी आवश्यकता पडती है वह हमारे मन-मस्तिक के किसी कौने से निकलकर हमें मंजिल पर पहुंचाने में सहयोगी बनती है और शिक्षक बन रहे युवाओं के लिये तो इसका महत्व और भी ज्यादा है, क्योंकि वे जितनी अच्छी तरके से अपनी पढ़ाई करेंगे, उतनी ही अच्छी ही तरीके से अपने विद्यार्थियो को बतायेंगे।

इस दौरान कलेक्टर ने जहॉ विद्यार्थियो को अपने जीवन संघर्ष के बारे में भी विस्तार से बताया, वहीं उन्होने संस्था की लायब्रेरी का भी निरीक्षण कर संस्था प्राचार्य डॉ. साधना भवर को निर्देशित किया कि वे लायब्रेरी में उपलब्ध किताबों को विद्यार्थियो को घर ले जाने के लिये दे, जिससे विद्यार्थी फुर्सत के क्षणो में इनका पठन-पाठन कर सके। इस दौरान कलेक्टर के साथ जिला पंचायत सीईओ अनिल कुमार डामोर, डीपीसी संजयसिंह तोमर भी उपस्थित थे।

पीजी कॉलेज में संपन्न हुई राष्ट्रीय सेवा योजना की सी प्रमाण पत्र परीक्षा

माही की गूंज, खरगोन।

शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में सी प्रमाण पत्र की परीक्षा संपन्न हुई। परीक्षा में शासकीय महाविद्यालय भीकनगांव, शासकीय महाविद्यालय बड़वाह व खरगोन के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। पीजी कॉलेज में बुधवार को राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा कराई गई सी प्रमाण पत्र की मौखिक परीक्षा जिसमें जिले के सभी छात्र-छात्राएं सम्मिलित हुए। मौखिक परीक्षा में समिति सदस्यों व प्राचार्य ने राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े प्रश्न विद्यार्थियों से पूछे जिनका बड़े रोचक ढंग से जवाब विद्यार्थियों ने दिया।

प्राचार्य डॉ. डीडी महाजन ने बताया कि, आपका एनएसएस कैंप किस गांव में लगा है वहां बेटी बचाओ का संदेश ग्रामीणों को देना है तो आपका प्रस्तुतिकरण कैसा होगा? विद्यार्थियों ने कहा, ग्रामीणों को समझाएंगे की बेटी बेटा एक समान है फर्क ना समझें बेटी को भी पढ़ाये है वह आपके परिवार का नाम रोशन करेगी। परीक्षा में इसके अलावा समिति के सदस्यों व प्राचार्य ने पौधारोपण पर्यावरण संरक्षण सफाई अभियान शिक्षा जागरूकता से जुड़े कई प्रश्न किए। जिनका विद्यार्थियों ने मौखिक तौर पर विस्तार से जवाब दिया परीक्षा के दौरान एनएसएस लेने का क्या उद्देश्य है? सर्व शिक्षा अभियान कैसे काम करता है? आदि विषयों पर भी प्रश्न उत्तरी की गई।

राष्ट्रीय सेवा योजना के जिला संगठक डॉ. सुरेश अवासे ने बताया, किसी प्रमाण पत्र युवाओं को प्रतियोगी परीक्षा एवं रोजगार के अवसर दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। परीक्षा के दौरान डॉ. सुनैना चौहान कार्यक्रम अधिकारी महिला इकाई, डॉ. सुदामा ठाकरे, डॉ. रविन्द्र बर्वे, डॉ. आरएस चौहान प्रो. मेहता और प्रो.कोचक सावन धनगर परीक्षा में हरिओम शारदे, प्रियंका, ज्योति, चंद्रभान डावर, शुभम, नीतू, वैष्णवी, हिमानी, विकास, रवि, नाना, गौरव ने भी प्रमाण पत्र मौखिक परीक्षा दी।

जिला चिकित्सालय में लगे स्पीच थैरेपी शिविर से मिला 4 बच्चो को लाभ

माही की गूंज, बड़वानी।

जिला चिकित्सालय बड़वानी मे प्रत्येक बुधवार को लग रहे निःशुल्क स्पीच थैरेपी शिविर से बच्चो को समय पर लाभ मिल रहा हैं इस बुधवार भी अरविन्दो मेडिकल कालेज के सहयोग से लगाये गये इस शिविर में बालक धैर्य पाल, पंकेश जीवन, दिशा मोरे, अभि आर्य को इस सुविधा का लाभ मिला है। शिविर के दौरान आरबीएस के नोडल अधिकारी डॉ. मनोज खन्ना, राधेश्याम जमरे, सोसल वर्कर लखन गांगले का सराहनीय योगदान रहा । इसी प्रकार प्रत्येक बुधवार को ही जिला चिकित्सालय में लगाये जा रहे निःशुल्क क्लब फुट शिविर का भी लाभ 0 से 2 वर्ष तक के ऐसे बच्चे जिनके पैर तिरछे है, उन्हें प्लास्टर, कास्टिंग का लाभ नोडल अधिकारी एवं हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. दीपक मुवेल द्वारा दिया जा रहा है। ज्ञातव्य है कि शिविर में क्लब फुट वाले 0 से 5 वर्ष तक के बच्चो को मिरेकल फिट इण्डिया बम्बई की संस्था के सहयोग से ब्रेस एवं सूज उपलब्ध कराये जा रहे है। वहीं ऐसे बच्चे जो 2 से 18 वर्ष तक के है एवं उनका आयुष्मान कार्ड है, उनका भी चिन्हांकित अस्पतालो में निःशुल्क उपचार कराकर लाभान्वित किया जा रहा है।

24 केन्द्रो पर होगी राज्य सेवा प्रारंभिक परीक्षा

माही की गूंज, बड़वानी।

राज्य लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक परीक्षा 19 जून को जिला मुख्यालय के 24 केन्द्रो पर दो चरणों में होगी। कलेक्टर शिवराजसिंह वर्मा ने इस परीक्षा को व्यवस्थित एवं नियमानुसार सम्पन्न कराने के लिये नोडल अधिकारी, उड़नदस्ता एवं केन्द्राध्यक्षों की नियुक्ति की है। कलेक्टरेट कार्यालय से प्राप्त जानकारी अनुसार कलेक्टर शिवराजसिंह वर्मा ने इस परीक्षा का नोडल अधिकारी अपर कलेक्टर डॉ. शालिनी श्रीवास्तव एवं सहायक नोडल अधिकारी जिला शिक्षा अधिकारी संजयसिंह तोमर को बनाया है। वहीं 3 उड़नदस्ता, 24 केन्द्राध्यक्ष बनाते हुये कलेक्टरेट में कन्ट्रोल रूम भी स्थापित किया है। उड़नदस्ता का गठन है इस प्रकार राज्य लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक परीक्षा हेतु 3 उड़नदस्तों का गठन किया गया है। पहला उड़नदस्ता का प्रभारी जिला आयुष अधिकारी डॉ. एचएस तोमर एवं जिला रोजगार अधिकारी टीएस डूडवे को, दूसरा उडनदस्ता का प्रभारी उपसंचालक कृषि केएस जामरे एवं ग्रामीण कृषि विस्तार अधिकारी सियाराम सोलंकी को, तीसरे उडनदस्ता का प्रभारी महिला बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी रतनसिंह गुण्डिया एवं सहायक संचालक महिला बाल विकास अजय गुप्ता को बनाया गया है। यह होंगे परीक्षा केन्द्र शासकीय पोलोटेक्निक महाविद्यालय बड़वानी, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान बड़वानी, पैरामाउण्ट एकेडमी बड़वानी, शासकीय कन्या हायर सेकेण्डरी स्कूल बड़वानी, शासकीय कन्या हाईस्कूल बड़वानी, रोटरी हाईस्कूल बड़वानी, केन्द्रीय विद्यालय बड़वानी, एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय बड़वानी, शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय बड़वानी, शासकीय बालक हायर सेकेण्डरी स्कूल क्रमांक-2 बड़वानी, शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बड़वानी, शासकीय हाईस्कूल बड़वानी, शासकीय हाईस्कूल क्रमांक-1 बड़वानी, महामृत्युजय कालेज ऑफ नर्सिग बड़वानी, नर्मदा कांवेंट हायर सेकेण्डरी स्कूल बड़वानी, वैष्णवी एनीमेंट हायर सेकेण्डरी स्कूल बड़वानी, वैष्णवी विद्या विहार हायर सेकेण्डरी स्कूल बड़वानी, जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान बड़वानी, सेंट मेरी सीनियर सेकेण्डरी स्कूल बड़वानी, हरसूख दिगम्बर जैन हायर सेकेण्डरी स्कूल बडवानी, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बड़वानी, शासकीय कन्या महाविद्यालय बड़वानी, पंचतनिया इग्लिश मीडियम हायर सेकेण्डरी स्कूल बड़वानी, क्रिसेंट पब्लिक स्कूल बड़वानी को परीक्षा केन्द्र बनाया गया है। दो चरणा में होगी परीक्षा 19 जून को आयोजित यह परीक्षा दो चरणों में होगी। प्रथम चरण की परीक्षा प्रातः 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक एवं द्वितीय चरण की परीक्षा दोपहर 2.15 बजे से शाम 4.15 बजे तक आयोजित होगी। 6 हजार से अधिक आवेदक होंगे सम्मिलित मध्यप्रदेश राज्य लोक सेवा आयोग की इस परीक्षा में जिले से 6962 आवेदक सम्मिलित होंगे । इसमें से 10 परीक्षा केन्द्रो में 200-200 विद्यार्थी, 3 परीक्षा केन्द्रो पर 250-250 विद्यार्थी, 6 परीक्षा केन्द्रो पर 300-300 विद्यार्थी, 3 परीक्षा केन्द्रो 400-400 विद्यार्थी, 1 परीक्षा केन्द्र पर 500 विद्यार्थी एवं 1 परीक्षा केन्द्र पर 712 विद्यार्थी सम्मिलित होंगे। कलेक्टर की अध्यक्षता में आयोजित हुई बैठक मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग की प्रारंभिक परीक्षा को आयोग के निर्देशानुसार सम्पन्न कराने के लिये बुधवार की सायं को कलेक्टर शिवराजसिंह वर्मा की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बीआर प्रजापति, अपर कलेक्टर डॉ. शालिनी श्रीवास्तव, संयुक्त कलेक्टर सुश्री अंशु जावला, एसडीएम बड़वानी घनश्याम धनगर सहित समस्त नोडल अधिकारी, केन्द्राध्यक्ष उपस्थित थे।

कार्यालय नगर परिषद, पेटलावद जिला-झाबुआ (म.प्र)

दुरभाष/फैक्स नं 07391-265439 — Email - cmopetlawad@mpurban.gov.in

क्रमांक/892 रा.शा./22 — पेटलावद, दिनांक 07/06/2022

प्रथम ई-निविदा आमंत्रण-सूचना

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निकाय को वार्ड क्र. 01 न्यू बस स्टेण्ड पर स्थित निकाय स्वामित्व की नव निर्मित दुकानों में से यात्रीप्रतीक्षालय के समीप बनी दुकान क्र. 01 को नीलामी/ power of acquisition पर दी जाना है। ऑनलाईन ई-प्रोक्यूरमेंट पोर्टल www.mptender. gov.in से UADD विभागन्तर्गत आमंत्रित की जाती है।

क्र	पोर्टल टेण्डर नम्बर	कार्य का विवरण	सरकारी बोली	अमानत राशि	निविदा प्रपत्र का मूल्य
1	2022_UAD_209302	वार्ड क्र. 01 न्यू बस स्टेण्ड स्थित निकाय की नव निर्मित दुकानों में से यात्री प्रतिक्षालय के पास स्थिति दुकान क्र. 01 की नीलामी / Power of acquisition (अनारक्षित) पर दी जाना है। दुकान की साईज 11*11 sq.ft.	11.00 लाख	22000/-	2000/-

नियम व शर्तें:-

1. इच्छुक निविदाकार निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाइट www.mptender. gov-.in पर देख सकते हैं।
2. ऑनलाईन निविदा प्रपत्र क्रय करने की दिनांक 08-06-2022 सांय 5.00 बजे से अंतिम दिनांक 22-06-2022 समय सांयकाल 5:30 बजे तक निर्धारित है।
3. ऑनलाइन बीड सबमिट करने की अंतिम तिथि 22-06-2022 सांयकाल 5:30 बजे तक निर्धारित है एवं बीड दिनांक 23-06-2020 को खोली जाएगी।
4. निविदा में किसी भी प्रकार का संशोधन केवल वेबसाइट पर प्रकाशित किया जाएगा।
5. निविदाकार को उपरोक्तनुसार अमानत राशि एवं निविदा प्रपत्र के मूल्य की राशि जमा की जाना अनिवार्य है। जिस हेतु निकाय द्वारा किसी भी प्रकार की छूट (Exemption) प्रदान नहीं की जावेगी।
6. निविदा से संबंधी अन्य विवरण पोर्टल पर देखे जा सकते हैं।
7. समस्त कार्य में म. प्र. न.प. अधिनियम 1961 एवं उसमें हुवे संशोधनो का पालन करना अनिवार्य होगा।
8. निविदा डालने के पूर्व निविदाकार स्थल निरीक्षण कर नगर परिषद में उपलब्ध शर्तों का अध्ययन करने के उपरांत ही टेंडर प्रविष्टी करे।
9. निकाय द्वारा जारी ई-निविदा की प्राप्त दरों को स्वीकृत/अस्वीकृत करने का अधिकार म.प्र. शासन द्वारा जारी राजपत्र दिनांक 04 मई 2021 में उल्लेखित क्रं. 04 (3) अनुसार सक्षम अधिकारी (पी.आई.सी अथवा परिषद) के पास सुरक्षित रहेगा।

श्री मनोहर भटेवरा
अध्यक्ष नगरपरिषद पेटलावद

श्रीमती माया सतोगिया
उपाध्यक्ष नगरपरिषद पेटलावद

श्री अशोकसिंह चौहान
मुख्य नगरपालिका अधिकारी
नगरपरिषद पेटलावद

एम्बुलेन्स में हुई प्रसुति मामले पर कलेक्टर ने लिया संज्ञान

माही की गूंज, अलीराजपुर।

कलेक्टर राघवेन्द्र सिंह ने समाचार माध्यमों से प्राप्त जानकारी अनुसार प्रसुता महिला का एम्बुलेन्स में प्रसव होने की सूचना मिलने पर सीएमएचओ डॉ. प्रकाश ढोके से तत्काल जानकारी ली। उक्त पूरे मामले पर उन्होंने गंभीरता से लेते हुए ड्यूटी पर तैनात संबंधित महिला चिकित्सक को नोटिस एवं वेतन कटौती के निर्देश दिए है। उन्होंने सख्त लहजे में निर्देश दिए कि जिला चिकित्सालय में व्यवस्थाएं सुनिचित है। बावजूद इसके मरीज को रैफर क्यों किया गया। उन्होंने निर्देश दिए कि गंभीर अवस्था में ही मरीज को रैफर किया जाए।

उमा भारती ने शराब दुकान पर फेंका गोबर

निवाड़ी।

मध्य प्रदेश में शराबबंदी को लेकर भाजपा की वरिष्ठ नेता उमा भारती के तेवर हमेशा तल्ख रहे हैं। अब उमा भारती ने राज्य के निवाड़ी जिले में शराब की एक दुकान पर गाय का गोबर फेंक दिया। उमा भारती राज्य में शराबबंदी की मांग काफी पहले से कर रही हैं और शराब की दुकान में वो पहले पत्थर फेंक कर भी चर्चा में आ चुकी हैं।

भाजपा नेता मंगलवार को ओरछा शहर में मौजूद थीं। जहां उन्होंने एक शराब की दुकान में गोबर फेंका है। उन्होंने ट्वीट कर दावा किया कि, जहां पर शहर में जहां पर यह शराब की दुकान थी उस जगह पर दुकान खोलने की अनुमति नहीं ली गई थी। उन्होंने कहा कि पवित्र शहर ओरछा में शराब की दुकान खोलना एक अपराध है।

हालांकि, पुलिस का कहना है कि यह दुकान उसी स्थान पर खोली गई है जहां के लिए अनुमति दी गई है। सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है, जिसमें उमा भारती दुकान पर गोबर फेंकती नजर आ रही हैं। वीडियो में दिख रहा है कि उमा भारती एक शख्स से कहती हैं, 'देखो मैंने गोबर फेंका है, पत्थर नहीं।

इससे पहले इसी साल मार्च के महीने में राज्य की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने भोपाल में शराब की एक दुकान में पत्थर फेंका था। बता दें कि ओरछा शहर राज्य की राजधानी भोपाल से करीब 330 किलोमीटर दूर है। यहां स्थित राम राजा मंदिर काफी प्रसिद्ध है और इसे एक धार्मिक शहर भी कहा जाता है। बहरहाल, अब शराब की दुकान में गोबर फेंकने के बाद उमा भारती ने कई सारे ट्वीट किये हैं। उन्होंने लिखा है कि, लोगों ने सरकार को कई बार ज्ञापन सौंप कर इस दुकान को हटाने के लिए कहा था क्योंकि यह दुकान पवित्र शहर के माथे पर कलंक है। सीएम ने ट्वीट कर कहा है कि हर तरह से नियम के विरुद्ध इस दुकान के विरोध में अब लोगों की कोई प्रतिक्रिया अपराध नहीं की जाएगी क्योंकि यहां पर दुकान खोलना ही महा अपराध है।

जादूगर निकला रेप का आरोपी

खंडवा।

बलात्कार के एक मामले में दस वर्ष से फरार चल रहे आरोपी को जावर पुलिस बिहार से दबोच लाई। खास बात यह कि फरारी के दौरान वह जादूगर के पास काम करने लगा और जादूगिरी सीख गया। पुलिस जब उसे पकड़ने गई तब वह जादू का शो चल रहा था। एक घंटे तक पुलिसकर्मियों ने उसका शो देखा। जैसे ही वह स्टेज से उतरा तो पुलिस ने उसे पकड़ लिया। आरोपी पर दस हजार रुपये का इनाम भी घोषित था।

खंडवा के जवार थाने के टीआई शिवराम जाट ने बताया कि, इस अपराधी के खिलाफ वर्ष 2007 में दुष्कर्म का मामला दर्ज किया गया था। आरोपी नानकराम को गिरफ्तार भी किया था। हालांकि, उसके बाद कोर्ट ने उसे जमानत दे दी। उसके बाद वह कोर्ट में पेशी पर नहीं आया और फरार हो गया। एसपी विवेक सिंह ने आरोपी पर दस हजार का इनाम भी घोषित किया था।

हेड कॉन्स्टेबल रफीक खान को मुखबिर से सूचना मिली थी कि, नानकराम अब जादूगर बन चुका है। फिलहाल वह पटना (बिहार) में जादू का शो करने गया है। उसकी गिरफ्तारी के लिए टीम पटना पहुंची। जादू के शो के बारे में पता किया गया और जब वहां पुलिस पहुंची तो नानकराम का शो चल रहा था। जब शो खत्म हुआ तो पुलिस ने उसे पकड़ लिया।

खुदाई के दौरान मिला 6.29 कैरेट का बेशकीमती हीरा

पन्ना।

जिले में अक्सर रहवासियों की किस्मत बदल जाती है। बुधवार को ऐसा ही एक मामला सामने आया है। पन्ना जिले के ग्राम जारुआपुर के रहवासी को लगभग 6.29 कैरेट का हीरा मिला है। दरअसल यह बेशकीमती हीरा जिन्हें मिला है उनका नाम सुनील कुमार है। पेशे से वे एक मजदूर हैं।

सुनील ने अपने कुछ साथियों के साथ मिलकर हीरा कार्यालय से हीरा खदान खोदने के लिए पट्टा लिया था। खुदाई के दौरान बुधवार को उनकी किस्मत खुली और उन्हें एक हीरा मिला। जिसके बाद पन्ना के हीरा कार्यालय में सुनील ने उस हीरे को जमा करा दिया है। वहीं सुनील कुमार ने कहा कि, उन्हें बड़ी खुशी है कि हीरा उन्हें ही मिला है। सुनील ने बताया कि, उनके साथ 6 लोग इस हीरे में हिस्सेदार हैं। सभी के घर की आर्थिक स्थिति भी खराब रहती है। लेकिन अब ऐसा लगता है कि भगवान ने हमारी सुन ली और हमें आशीर्वाद स्वरूप हीरा मिला है। जिससे हम सभी की परेशानियां दूर हो जाएगी।

हीरा कार्यालय के अधिकारी अनुपम सिंह ने कहा कि, 6.29 कैरेट का हीरा सुनील कुमार द्वारा कार्यालय में जमा किया गया है। जिसे आगे होने वाली हीरों की नीलामी में रखा जाएगा। इसके साथ ही 12 प्रतिशत रॉयल्टी काटकर शेष हीरे की राशि मजदूरों को वापस की जाएगी।

तीन सप्ताह पहले भी पन्ना की चमेली देवी को 2.08 कैरेट का बेशकीमती हीरा कृष्ण कल्याणपुर पट्टी की उथली खदान से मिला था। उन्होंने पति के साथ हीरा कार्यालय पहुंचकर हीरे को जमा करवा दिया था। इस हीरे की अनुमानित कीमत आठ से दस लाख रुपए तक बताई जा रही है।

सरपंच उम्मीद्वार के पति का शव पेड़ पर झूलता मिला

गुना।

मध्य प्रदेश में पंचायत चुनाव की सरगर्मियां तेज हैं। इस बीच एक सरपंच प्रत्याशी के पति की लाश पेड़ पर लटकी हुई मिली है। इस हालत में डेड बॉडी के मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई है। जानकारी अनुसार मृतक की जेब से एक सुसाइड नोट भी मिला है। अब पुलिस इस पूरे मामले की गहरी तफ्तीश में जुट गई है।

घटना गुना जिले की है। गुना जिले के म्याना थानाक्षेत्र में स्थित टकनेरा पंचायत में सरपंच उम्मीदवार के पति का शव पेड़ पर लटका मिला है। कहा जा रहा है कि, सोमवार की देर रात उन्होंने सुसाइड की है। पेड़ पर लटकते शव पर सबसे पहले ग्रामीणों की नजर पड़ी थी। इसके बाद गांव वालों ने तुरंत पुलिस को इसकी सूचना दी थी। मृतक का नाम गोविंद यादव बताया जा रहा है। पुलिस के मुताबिक, गोविंद यादव की जेब से एक सुसाइड नोट भी मिला है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इस सुसाइड नोट में कुछ लोगों के नाम लिखे गये हैं और आरोप लगाया गया है कि यह लोग चुनाव को लेकर उन्हें परेशान कर रहे थे।

बहरहाल, पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया है। पुलिस का कहना है कि मामले में मर्ग कायम कर तफ्तीश शुरू कर दी गई है। जिसके बाद अब उममीद जताई जा रही है कि जल्द ही इस मामले में कुछ अहम खुलासे हो सकते हैं।

आजादी का अमृत महोत्सव स्वतंत्रता के प्रतीक महाराणा प्रताप पर ओजपूर्ण परिचर्चा

माही की गूंज, बड़वानी।

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत प्राचार्य डॉ. एनएल गुप्ता के मार्गदर्शन में शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी के स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ द्वारा भारतीय इतिहास के ऐसे नायक पर परिचर्चा का आयोजन किया गया, जो स्वतंत्रता और स्वाभिमान के प्रतीक हैं। एम.ए. इतिहास के विद्यार्थी युवा वक्ता कोमल गोठे ने बहुत ही प्रभावी और ओजपूर्ण ढंग से महानायक महाराणा प्रताप के जीवनवृत्त की जानकारी दी तथा उनके संघर्ष और स्वाधीनता प्रेम को रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि 1540 से 1597 तक के महाराणा प्रताप के 57 वर्षीय जीवन वृत्त को सुनाते हुए हल्दीघाटी के युद्ध को विस्तार से रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि प्रताप ने मुगल सत्ता के विरुद्ध अपने स्वाभिमान के लिए जमकर संघर्ष किया और मृत्युपर्यंत स्वाधीन रहे। सुख सुविधाओं का सहज मार्ग अपनाने की अपेक्षा उन्होंने बलिदान का कंकटाकीर्ण मार्ग अपनाया और स्वाभिमान के जीवंत उदाहरण बन गए। उनका जीवनकाल उनकी स्वाभिमानी प्रवृत्ति के लिए भारतीय इतिहास का स्मरणीय कालखंड बन गया। प्रभावी प्रस्तुति पर उन्हें नकद पुरस्कार और कलम प्रदान करके सम्मानित किया। कार्यकर्ता प्रीति गुलवानिया ने बताया कि कॅरियर सेल द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत निरंतर परिचर्चाओं और गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें युवा विद्यार्थी इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अंकित महानायकों पर अध्ययन-अनुसंधान करके अपनी जानकारियों को अपने साथियों के साथ साझा कर रहे हैं।

कॅरियर काउंसलर डॉ. मधुसूदन चौबे ने बताया कि, इतिहास, जनश्रुति एवं काव्य तीनों में महाराणाप्रताप का विराट व्यक्तित्व है। वे स्वाभिमान और राष्ट्रवाद के जीवंत उदाहरण हैं। उन्होंने मुगल बादशाह अकबर के विरुद्ध जिस दृढ़ता और जुझारुपन का प्रदर्षन किया था, वह अद्वितीय है। उनके घोड़े चेतक और हाथी रामप्रसाद ने अपनी वीरता से अकबर को दंग कर दिया था। संचालन साक्षी परमार ने किया। आजादी के अमृत महोत्सव की गतिविधियों को आयोजित करने में कॅरियर सेल के कार्यकर्तागण प्रीति गुलवानिया, किरण वर्मा, राहुल भंडोले, कोमल सोनगड़े, उमा फूलमाली, अंबिका वैष्णव, स्वाति यादव, दिव्या पाटिल, राहुल सेन, कन्हैया फूलमाली आदि सहयोग कर रहे हैं।

तालाब किनारे महिला का जलता मिला शव

रीवा।

जिले के बिछिया थाना क्षेत्र में सोमवार की रात संदिग्ध परिस्थितियों में तालाब के किनारे एक महिला का शव जलता हुआ मिला है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई। प्रारंभिक जांच में महिला की हत्या कर शव को जलाने की आशंका जताई जा रही है। फिलहाल पुलिस इस पूरे मामले की जांच कर रही है। यह घटना बड़ोखर गांव की है। रात में आग देखकर जब लोगों ने समीप जाकर देखा तो महिला का शव जल रहा था। जिसके बाद ग्रामीणों ने इस घटना की सूचना पुलिस को दी। जिसके बाद पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिस जब पहुंची तबतक महिला का लगभग पूरा शरीर जल चुका था।

पुलिस ने घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण किया लेकिन फिलहाल घटना को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं हो पाई है। आशंका जताई जा रही है कि महिला की हत्या करने के बाद शव को जलाया गया है। महिला की पहचान ओढ़की निवासी श्यामदेवी के रुप में हुई है। पुलिस और एफएसएल की टीम ने फिलहाल घटनास्थल से भौतिक साक्ष्य एकत्रित कर जांच शुरू कर दी है। जांच के बाद ही वास्तविकता सामने आ पाएगी। फिलहाल पुलिस इस पूरे मामले की जांच कर रही है।

2 लोग भागते नजर आए

घटनास्थल से कुछ दूरी पर रहने वाले बच्चे ने दो लोगों को भागते हुए देखा है। हालांकि, अंधेरा होने की वजह से वह उनको पहचान नहीं पाए। जिस समय आग लगी थी उसी समय दोनों लोग वहां से भागे हैं। इस बात की संभावना जताई जा रही है कि आरोपियों ने पहले महिला की हत्या की है और बाद में शव को जला दिया है।

इस घटना की सूचना मिलने पर पुलिस अधीक्षक नवनीत भसीन भी मौके पर पहुंचे और उन्होंने घटनाक्रम की जानकारी ली। उन्होंने घटना के बाद सामने आए तथ्यों के आधार पर पुलिस को जांच कर आरोपियों को जल्द से जल्द गिरफ्तार करने के निर्देश दिए हैं।

कपड़े उतारकर युवक की बेरहमी से की पिटाई, अंगारों से दागा

गुना।

जिले में एक युवक के साथ बेरहमी से पिटाई करने का वीडियो सामने आया है। वीडियो में एक महिला और कुछ अन्य लोग युवक के कपड़े उतारकर बुरी तरह से उसकी पिटाई करते दिखाई दे रहे हैं। आरोपियों ने युवक के हाथ पैर पकड़ कर सबसे पहले मारपीट की और उसके बाद आग के अंगारों से दागा। वीडियो वायरल होने के बाद पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर तलाश शुरू कर दी है।

जिले के विजयपुर इलाके के कोलुआ पठार में रहने बाला युवक गोपाल सिंह बंजारा पास के ही गांव पंजेड़ा में बाबूलाल बंजारा के यहां उधारी के पैसे लेने गया था। जब गांव के नजदीक पहुंचा तो बाबूलाल बंजारा और उसके लड़के चेन सिंह, मुन्नू लाल ने रास्ता रोक लिया और उसके बाद युवक के साथ गाली गलौज करने लगे। विवाद इतना बढ़ गया कि इन आरोपियों ने युवक के हाथ पैर पकड़कर बेहरमी से पिटाई की। इसके बाद आरोपियों ने युवक की दोनों आंखों में जमकर घूसे मारे, जिससे आंखों से खून निकल आया।

आरोपियों की तलाश में जुटी पुलिस

जब आरोपियों ने युवक को पकड़ा था उस दौरान एक महिला भी उनके पास आ गई और वह भी युवक से मारपीट करने लगे। वीडियो में युवक के हाथ पैर बांधकर ये आरोपी जमकर मारपीट करते दिखाई दे रहे हैं। युवक ने बताया है कि आरोपियों ने अंगारों से दागा है, जिससे वह बुरी तरह जल गया है। आरोपियों ने ही मारपीट का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया है। वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद राघोगढ़ थाना पुलिस ने आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है इसके साथ ही पीड़ित युवक की शिकायत पर महिला और तीनों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

10 हजार महिलाओं को लगाया 90 लाख रुपये से ज्यादा का चूना

इंदौर।

एक शातिर ने मध्यप्रदेश के कई जिलों में महिलाओं को शातिराना तरीके से चूना लगाया। बताया जा रहा है कि, इस ठग ने करीब 10 हजार महिलाओं को ठगा है। इसने महिलाओं से करीब 98 लाख 50 हजार रुपये की ठगी की है। सोमवार को इंदौर में एक पुलिस अधिकारी ने बताया कि इसने राज्य में अलग-अलग जगहों पर महिलाओं को निशाना बनाया है।

दर्जी की ट्रेनिंग दिलाने का किया वादा

आरोपी की पहचान अमित वर्मा के तौर पर हुई है। अमित के बारे में बताया जा रहा है कि, वो ममता महिला उत्थान फाउंडेशन नाम के एक एनजीओ में रिजनल को-ऑर्डिनेटर के तौर पर काम करता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, वर्मा महिलाओं को दर्जी की ट्रेनिंग दिलवाने का लालच दिया करता था।

एक हजार रुपए लेता था

आरोपी ने कई महिलाओं से वादा किया था कि वो 20 प्रशिक्षुओं का एक ग्रुप बनाएगा। वो हर प्रशिक्षु से रजिस्ट्रेशन फीस के नाम पर एक हजार रुपया लिया करता था। यह पैसे वो अपने बैंक अकाउंट में डाल दिया करता था। सभी महिलाओं से यह भी वादा किया गया था कि तीन महीने के बाद उन्हें 9 हजार रुपये मिलेंगे।

रजिस्ट्रेशन फीस लौटाने का किया वादा

पुलिस के अनुसार यह ठग महिलाओं से यह भी वादा करता था कि ट्रेनिंग खत्म होने के बाद उनका रजिस्ट्रेशन फीस वापस कर दिया जाएगा। इसके अलावा उन्हें एक हजार रुपये और सर्टिफिकेट भी दिये जाएंगे। पुलिसिया जांच में खुलासा हुआ कि वर्मा एनजीओ के बैंक अकाउंट में यह पैसे नहीं डालता था। पुलिस का कहना है कि मामले में आगे की जांच अभी जारी है।

पिज्जा गर्ल पर टूटा लेडी गैंग का कहर

भोपाल।

एक युवत की बेरहमी से पिटाई किये जाने का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है। पीड़ित युवती उस वक्त मदद के लिए लोगों से गुहार लगा रही थी लेकिन किसी ने उसकी मदद नहीं की। गंभीर बात यह भी है कि उसकी पिटाई 4 लड़कियों ने ही मिल कर की है। लड़की को डंडे से भी पीटा गया है।

सोशल मीडिया पर वायरल वीडियो में नजर आ रहा है कि 4 लड़कियों ने इस युवती को घेर लिया है और उसकी जमकर पिटाई कर रही हैं। एक लड़की के हाथ में डंडा भी है जिससे वो युवती को पीट रही है। वीडियो में नजर आ रहा है कि यह पीड़िता चीख-चिल्ला और रो रही है लेकिन कोई उसकी नहीं सुनता है। कुछ लोग भी आसपास जमा हैं लेकिन वो उसकी मदद नहीं करती हैं।

युवती के बाल खींचे जाते हैं और धक्का देकर सड़क पर गिरा दिया जाता है। लेकिन किसी को भी उसपर दया नहीं आती है। किसी तरह वो लड़की उठने के बाद इन चारों लड़कियों से बचने के लिए एक घर की तरफ दौड़ती है। पीड़ित लड़की को लात, थप्पड़ और घूसे से भी पीटा जाता है।

जिस लड़की की पिटाई की गई है वो पिज्जा डिलीवरी का काम करती है। चारों लड़कियों ने आरोप लगाया था कि, पीड़िता उन्हें घूर रही थी और फिर इसके बाद उसकी पिटाई की गई है। जब पीड़िता इन लड़कियों से कहती है कि वो पुलिस में इसकी शिकायत करेगी तो चारों बेखौफ लड़कियां उससे कहती हैं कि जा कर थाने में शिकायत दर्ज करवा दो।

अब इस मामले में थाने में शिकायत दर्ज कराया गया है। बताया जा रहा है कि लड़की डोमिनोज़ की कर्मचारी है। जिन 4 लड़कियों ने उसकी पिटाई की है उनके बारे में कहा जा रहा है कि वो एक स्थानीय गैंग की सदस्य हैं। इस वीडियो को आरोपियों ने खुद ही शेयर किया है।

कौन बनेगा खास गॉव खवासा का सरताज, "जानिए अपने सरपंच पद प्रत्याशी को"

माही की गूंज, खवासा।

थांदला विधानसभा की सबसे बड़ी पंचायत ग्राम पंचायत खवासा का सरपंच पद महिला आरक्षित होने से कई दावेदारों के अरमान ठंडे पड़ गए, वहीं वर्तमान में 4 दावेदारों ने अपनी दावेदारी जताई है। जिसमें वर्तमान सरपंच रमेश बारिया की पत्नी मुन्नीबाई बारिया, पूर्व में सरपंच रह चुकी जैनीबाई भूरिया व पिछले कई वर्षों से सरपंच पद के लिए प्रयासरत शंकरसिंह खराड़ी की माताजी गंगाबाई खराड़ी तथा कांग्रेस के समर्थन का दावा करने वाली शकुंतला वसुनिया है।

वैसे तो चारों दावेदार अपनी-अपनी जीत का दावा कर रहे हैं, लेकिन मतदाता किसके पक्ष में अपना मत देते हैं यह तो 25 जून को ही पता चल सकेगा। लेकिन मतदान के पूर्व अपने सरपंच प्रत्याशी को जानना महत्वपूर्ण है।

(1) तो बात करते हैं सबसे पहले वर्तमान सरपंच रमेश बारिया की जो भले ही खुद चुनाव नहीं लड़ रहे है, लेकिन पत्नी का तो केवल नाम है और चुनाव तो रमेश बारिया के नाम पर ही लड़ा जा रहा है।

मजबूत पक्षः- मुन्नीबाई बारिया को अपने सि जो कि, निवृतमान सरपंच भी है के विकास कार्यों का फायदा मिलेगा। पहचान की कमी नहीं, आर्थिक रूप से सक्षम, चुनावी मेनेजमेन्ट में माहिर तथा भविष्य में विधायक की दावेदारी की भी संभावना। साथ ही मुक्तिधाम में बाउंड्रीवाल निर्माण के साथ ही पूरे गॉव में सीमेंट कांक्रीट रोड जैसी उपलब्धियो के बलबुते मतदाताओ से एक और अवसर मॉग रहे है।

शकुंतला वसुनिया

गंगाबाई खराड़ी

जैनीबाई भुरिया

मुन्नीबाई बारिया

कमजोर पक्षः- सत्ता विरोधी लहर, खवासा के इतिहास में 1993 के बाद से किसी भी सरपंच को दौबारा मौका नहीं मिला है। गॉव में जीवित संपर्क नहीं, भू-माफिया की छवि, पंचायत के कार्यों में व्याप्त भ्रष्टाचार के आरोप, परिवारवाद को बढ़ावा देना, अन्य नेताओ से तालमेल का अभाव, गॉव के अतिक्रमण को न हटा पाना, गांव के हित की अपेक्षा अपना हित देखना। जल संकट की समस्या का समाधान न कर पाना।

(2) पूर्व में सरपंच रह चुकी जैनीबाई भूरिया भी चुनावी समर में दबंगना से ताल ठोक रही है। वे अपने सरपंच कार्यकाल में किए गए कार्यों के बलबूते मतदाताओ से एक बार पुनः अवसर देने की मांग कर रही है।

मजबूत पक्षः- गॉव में जीवित संपर्क, पूर्व में किए गए कार्य, महिलाओ में अच्छी पकड़, निर्णय लेने में स्वतंत्र, स्वच्छ छवि, मिलनसार व पंचायत के कार्यों के लिए समर्पित, सरपंच पद का अनुभव।

कमजोर पक्षः- दबंग छवि एसी की पंचायत में अनियमित्ताओ के विरूद्ध बोलने वालो को महीला पावर दिखाकर तमाचा तक मार देना। किसी को साथ न रख पाना, एकला चलो की नीति, सरपंच कार्याकाल में असफल हुई ढोलखरा नल-जल योजना, अन्य नेताओ से तालमेल का अभाव। सोमेश्वर मिस्त्री के साथ हुई घटना व जमीन को हत्याने के आरोप।

(3) गंगाबाई खराड़ीः- पिछले कई वर्षों से खवासा में सरपंच पद के लिए प्रयासरत शंकरसिंह खराड़ी ने महिला सीट होने से अपनी मां गंगाबाई खराड़ी को इस पद के लिए आगे किया है।

मजबूत पक्षः- शंकरसिंह खराड़ी की छवि साफ सुथरे युवा के रूप में, गॉव में लंबे समय से संपर्क, संघ से जुड़े होना, पूर्व चुनाव में नंबर 2 पर रहने की सहानुभूति, विवादों से दूर, मिलनसार, अन्य नेता व हर किसी से अच्छा तालमेल।

कमजोर पक्षः- गांव में सक्रियता की कमी, पिछले चुनाव में दो नंबर पर रहने के बावजूद गांव में जीवित संपर्क नही, परिपक्वता का अभाव, गांव की ज्वलंत समस्या के प्रति उदासीन, जनहित के मुद्दे को न उठा पाना, निर्णय लेने की क्षमता में अभाव।

(4)शकुंतला वसुनियाः- नई उम्मीद्वार, स्वच्छ छवी, कांग्रेस के समर्थन का दावा

कमजोर पक्षः- पहचान का आभाव, चुनाव के प्रति गंभीरता का अभाव, मतदाताओ से कोई जुड़ाव नहीं, गांव की समस्या के प्रति समझ की कमी,, आम मतदाताओ में वोट काटने वाले उम्मीद्वार की छवि।

चुनावी माहौल गर्माते ही नए क्लब के गठन के क्या है मायने...

जिला मुख्यालय के प्रभावी पत्रकारों को क्यों पड़ी संगठित होने की जरूरत

माही की गूंज, झाबुआ।

कहने को तो जिले में पत्रकारों के कई संगठन है और हर एक पत्रकार किसी न किसी संगठन से जुड़ा हुआ है। मगर बावजूद इसके ग्रामीण पत्रकारों पर कोई विपत्ती या परेशानी आने पर कुछेक संगठन ही ग्रामीण पत्रकारों के पक्ष में खड़े होकर उनकी परेशानी और हक की आवाज उठाते आए है। बाकी के सारे संगठन या उनसे जुड़े लोग सिर्फ और सिर्फ स्वार्थ सिद्धी तक ही सीमित दिखाई पड़ते है। संगठन के नाम पर अधिकारियों को डराना, धमकाना और अवैध उगाही जिले में आम बात हो चली है। स्थिति तो इतनी खराब है कि, कई लोग इन संगठनों में सदस्यता या पद इसलिए लेते है ताकि वे अपने वाहनों पर संगठनों के नाम की प्लेट लगाकर या कार्ड बनवाकर रोड का टोलटेक्स बचा सके। जिले में यूं तो कई संगठनों को बनते और गायब होते देखा है। मगर अब जिले में ऐसे संगठन मौजूद है जो ग्रामीण पत्रकारिता की आवाज को मुखर किए हुए है। पत्रकारों पर आने वाली विपत्तियों में हमेशा तत्तपर दिखाई पड़ते है। जिला पत्रकार संघ इसका जीता-जागता एक प्रमाण है। हालांकि जिले के इस संगठन को जिला मुख्यालय पर बैठे प्रभावी पत्रकार जो जिले की पत्रकारिता में अपनी एक तरफा तुती होने का डंका बजाते है का कभी कोई विशेष सहयोग ग्रामीण पत्रकारो को नहीं मिला। उसका सीधा सा कारण यह है कि जिला मुख्यालय पर बैठे वरिष्ठ व प्रभावी होने का अहम ही जिले के ग्रामीणों पत्रकारों को पत्रकार की गिनती में नहीं रखता, वरन उनकी नजरों में गांव का पत्रकार सिर्फ और सिर्फ एक हाकर से ज्यादा कुछ नहीं। जिला मुख्यालय के यह प्रभावी किसी ग्रामीण पत्रकार पर आने वाली विपत्तीयों में कभी उनके साथ नजर नही आते। हां इतना जरूर है कि जिस अहम में जिला मुख्यालय के यह प्रभावी मान रहे है वह भी उन्हे ग्रामीण पत्रकारों के जरिये ही मिला है। जिले की जमीनी हकीकत ग्रामीण पत्रकार ही इन तक पहुंचाते, मगर नाम जिला मुख्यालय के पत्रकारो का ही होता है। ग्रामीण पत्रकार इनके लिए सिर्फ सूचना करने तक का जरिया ही साबित होते है।

जिला मुख्यालय के इन पत्रकारों को कभी किसी संगठन में रूची नहीं रही। जिला मुख्यालय के वरिष्ठ और बड़े पत्रकार जिले में होने वाले पत्रकार सम्मेलनों और आयोजनों से अक्सर दूरी ही बनाए रखते है। मगर पिछले दिनों जिला मुख्यालय के इन प्रभावी पत्रकारों को भी एक संगठन बनाने की जरूरत आन ही पड़ी। जिला मुख्यालय के कई वरिष्ठ और बड़े पत्रकारों ने पिछले दिनों एक मीडिया क्लब नाम के संगठन का गठन किया। मीडिया क्लब के गठन के बाद जारी समाचारों में यह बताया गया कि, इस संगठन में सिर्फ उन्ही लोगों को सम्मिलित किया जाएगा जो पूरी ताकत और सक्रियता से पत्रकारिता के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाए हुए है। जारी प्रेसनोट के अनुसार इस संगठन का उद्देश्य भी यही है कि, निरंतर अपना विश्वास खोती जा रही पत्रकारिता के सम्मान को पुनरस्थापित किया जा सके। मगर अफसोस इस बात का है कि, निरंतर अपना विश्वास खोती जा रही पत्रकारिता भी इन्ही प्रभावी मानने वाले की वजह से इस स्थिति में पहुंची है। इस संगठन में शामिल कई वरिष्ठ ऐसे है जो आज भी गुलाम पत्रकारिता कर रहे है। जिन्हे उनके संस्थान में एक शब्द भी अपनी मर्जी का लिखने की इजाजत नहीं देते। इन में कई पत्रकार ऐसे है जो ऐसे अखबारों के ब्योरो है जो सिर्फ और सिर्फ सरकार समर्थित है। इन अखबारों में सरकार की आलोचना की जैसी कोई जगह ही नहीं है। यहां आमजनता के सरोकार की कोई बात ही नहीं है सिर्फ और सिर्फ सरकार की तारीफों के पुलिंदे गढ़े जाते है। वरिष्ठों की इस जमात में कई वरिष्ठ ऐसे है जो अपनी जमीन ढूंढने निकले है, इसलिए सवाल तो उठते है। जिले में कई संगठन है, बावजूद इसके जो जिला मुख्यालय पर पत्रकारिता की तुती का डंका बजाने वाले प्रभावी को एक नए संगठन को खड़ा करने के क्या मायने है?

कहीं ऐसा तो नही कि प्रभावियो को अब अपनी जमीन तलाश करनी पड़ रही है। जो वरिष्ठ और बड़े पत्रकार किसी भी संगठन से जुडने से परहेज करते रहे वे आज खुद क्षत्रप बनकर अपना खुदका संगठन बना रहे है। हालांकि इन प्रभावियो का यह मानना है कि, जिला मुख्यालय पर एक ऐसे संगठन की आवश्यकता है जो पत्रकार और पत्रकारिता के हित में मजबूती के साथ कार्य करे। जिससे पिछले कुछ समय में पत्रकारिता के क्षेत्र में जो रिक्त स्थान आया है उसकी पूर्ति की जा सके। मगर अफसोस तो यह है कि इन्हे यह मालूम नही है कि पत्रकारिता तो हमेशा है और हमेशा रहेगी इसमें किसी तरह का कोई रिक्तस्थान आ ही नहीं सकता। हां यह जरूर माना जा सकता है कि, इन प्रभावियो की पत्रकारिता में जरूर रिक्तस्थान आया होगा। अधिकारियों से संबंध निभाना, चापलूसी करना, तलवे चाटना और जब पत्रकार अपनी स्वार्थ सिद्धी की तरफ मुड़ता है तो निश्चित ही उसकी पत्रकारिता में एक रिक्तस्थान आ जाता है। मगर जब अधिकारियों से संबंध बिगड़तें है, चापलूसी काम नही आती है, तलवे चाटने पर भी जब स्वार्थ पूरा नही होता है, तब रिक्तस्थान के आगे की कहानी शुरू होती है। और वह कहानी यही है कि अपनी जमीन ढूंढो, इक हो जाओ, संगठन बनाओ। यही वजह है कि शायद जिला मुख्यालय के प्रभावी पत्रकारों को एक नए संगठन के गठन की जरूरत आन पड़ी।

दूसरे चश्में से अगर देखा जाए तो कई मायने निकाले जा सकते है।मगर अभी चुनावों का दौर शुरू हुआ है और यह दौर लंबा चलना है। अभी त्रिस्तरीय पंचयाती राज चुनाव चल रहे है। इसके बाद नगरीय निकाय के चुनाव और फिर विधानसभा, उसके बाद लोकसभा, कुल मिलाकर चुनावों का लंबा दौर है। इस नजरिये से भी अपना प्रभुत्व रखने वाले को भी इस तरह संगठित होने के साफ-साफ मायनें यह निकाले जा सकते है कि, चुनावों के इस लंबे दौर में राजनीतिक पार्टियों से आर्थिकी सहयोग मिल सके। यह भी हो सकता है कि चुनावी इस दौर में सिर्फ और सिर्फ संगठन से जुड़े पत्रकारों को फायदा पहुंचाया जाए और राजनीतिक पार्टियों से पैकेज ले लिया जाए। यह भी हो सकता है कि जिला मुख्यालय के स्वंतत्र पत्रकारों का बिना बोले बायकाट कर दिया जाए। सवाल और भी बहुत से है? मगर क्या करें परिस्थितियां ही मजबूर करती है सवाल उठाने को? क्योंकि नए बने संगठन में कई चेहरे ऐसे है जो उनकी ही शर्तों पर खरे नहीं उतरते। कोई राजनीतिक पृष्ठ भूमि का है, कोई व्यवसायिक है, कई ऐसे है जिन्हे पत्रकारिता का कोई लंबा अनुभव भी नहीं, कई तो सिर्फ कैमरा मैन है, कई को समाचार लेखन तक नहीं आता। ऐसा नहीं है कि जिला मुख्यालय पर इतने ही पत्रकार है या इनसे अच्छे पत्रकार नहीं है, या इनसे ज्यादा सक्रिय नही है, या इनसे ज्यादा अनुभवि नही है। मगर क्या करें यहां सवाल यह नहीं है। सवाल तो एकाधिकार का है, उनके अहम का है, जो उन्हे जमीन पर आने ही नहीं देता। अगर यह संगठन स्वार्थ सिद्धी के लिए नहीं बना है तो शामिल कीजिए उन लोगों को जो लंबे समय से पत्रकारिता करते आ रहे है, जिन्हे दशकों का अनुभव है, लंबे समय से सक्रिय है। सहयोग लिजिए उन संगठनों का जो जिले में वर्षों से कायम है और पत्रकारों और पत्रकारिता के लिए हमेशा जूझते रहते है।

मगर ऐसा नहीं होगा, क्योंकि यह क्लब सिर्फ अपने प्रभुत्व रखने वाले का बनाया हुआ संगठन है, और वर्चस्व की लड़ाई यहां हावी है, संगठन के मुख्य पद भी अपना प्रभुत्व रखने वालो के हाथों में ही है। यह भी समय के गर्त में है कि इस संगठन में शामिल इन प्रभावियो के बीच कब तक तालमेल बैठेगा। क्योंकि संगठन में शामिल सभी प्रभावी व जिला मुख्यालय के वरिष्ठ पत्रकार ही रहे है। पिछले सालों में कभी इनका ऐसा तालमेल नहीं बैठा। अब इस तरह से संगठित होना इस बात का अंदाजा लगाने पर मजबूर कर रहा है कि यह कितने दिन टिकेगा। जिला मुख्यालय के बाकी वरिष्ठ पत्रकार इस संगठन से अब तक दूर है। और अगर बाकी बचे वरिष्ठ इस संगठन से जुड़तें है तो इनके पदों को हमेशा खतरा महसूस होता रहेगा।

वार्ड क्रमांक 3,7 व 16 में रोचक मुकाबला

माही की गूंज, खवासा। कहते हैं कि, समय बड़ा बलवान होता है और समय अच्छा हो तो तु-तु करने वाले भी आप-आप करने लग जाते हैं और समय खराब हो तो, उट पर बैठकर बकरी चराने वाले को भी कुत्ता काट लेता है। कभी केंद्रीय मंत्री के साथ रहे पूर्व उपसरपंच जिला कांग्रेस अध्यक्ष नंदलाल मैण पिछले दो चुनावों से वार्ड के पंच का चुनाव नहीं जीत पा रहे हैं, वहीं इस बार भी वह स्वयं और उनकी पत्नी चुनावी मैदान में बहुकोणीय मुकाबले में फसते नजर आ रहे हैं। कुछ इसी प्रकार के चुनावी चक्रव्यूह में कभी भाजपा के जिला अध्यक्ष पद के दावेदार रहे पूर्व जनपद सदस्य व पिछले एक से ज्यादा चुनाव हार चुके प्रेमसिंह चौधरी भी जनपद सदस्य के त्रिकोणीय मुकाबले में नजर आ रहे हैं। कहते हैं जिसे ''में'' की नजर लगी फिर उसे ''न दुआ लगी नहीं दवा'' कुछ ऐसा ही मामला प्रेमसिंह चौधरी का राजनितिक नजर आ रहा है। अपनी लच्छेदार भाषा से लोगों को उलझाने वाले प्रेम सिंह चौधरी को राजनीतिक नौसिखियों के सामने चुनाव लड़ना पड़ रहा है। प्रेमसिंह चौधरी भी शायद ''मैं'' नामक बीमारी से ग्रसित है और शायद इसीलिए वे हर काम में मैं यह कर दूं या मैं यह कर दिया या मैं ये कर दूंगा आदि शब्दों के मायाजाल में उलझा रहे है। अब वे जनता को कितना प्रभावित कर पाते हैं यह तो 25 तारीख के बाद ही पता चल सकेगा। भाजपा ने यहां से आरती हेमेंद्र सिंह पालरा को अपना समर्थन दिया है। जबकि माया जितेंद्र सिंह नकुम कांग्रेस के समर्थन का दावा कर रही है। प्रेमसिंह चौधरी की ओर से उसकी पत्नी माया देवी ने महिला सीट होने से अपनी दावेदारी पेश की है।

वही अगर खवासा पंच की 20 वार्ड की स्थिति देखें तो, यहां से वार्ड क्रमांक 4, 5, 6, 9, 10, 17 निर्विरोध हो चुके हैं। जबकि 1 से चार प्रत्याशी बाबूलाल प्रेमचंद्र सिंगाड, भेरूलाल डिंडोर, रमेश डामर व संजय सिंगाड़। वार्ड 2 से ब्रहमावती डिंडोड़, रेशमा, का सिधा मुकबला। वार्ड 3 से 5 उम्मीद्वार जगदिष पाटीदार कांतीलाल भटेवरा, मोहीत भटेवरा, नन्दलाल मांगीलाल मैण, संजय चौपडा। वार्ड 7 से घीसुबाई प्रजापत, गोमती प्रजापत,नन्दी बाई नंदलाल मैंण, नितादेवी चौहान। वार्ड 8 से आंनदीलाल सिसोदिया, केलाश, शंकरलाल मालवीय। वार्ड 11 से मधुबाला पाटीदार, रंजना पाटीदार। वार्ड 12 से राकेश पाटीदार, सुनिल पाटीदार। वार्ड 13 से गोरधन पाटीदार, राकेश पाटीदार। वार्ड 14 से ललीता रलोतिया, राजु बाई सिसोदिया। वार्ड 15 से बद्रीलाल डिंडोर, जितेन्द्र डिंडोर, रमेशचंद्र सिंगाड, वार्ड 16 से अक्षय चौहान, अनिरूध जाट, प्रणवीर बैरागी, संतोष लोहार, विपुल चौधरी। वार्ड 18 से मनोहर सिंह बारिया, ललीता सिंगाड़। वार्ड 19 से मडीया सिंगाड़, केलाश डामर। वार्ड 20 से भुंडी डिंडोर, पिंकी बाबुलाल सिंगाड़ चुनावी मैदान में है। यहा वार्ड 3,7व16 में दिलचस्प बुकाबला देखने को मिलेगा।

रॉबिनहुड का दबाव... और हम से ना हो पाएगा... कलेक्टर...?

फंड का फंडा अपनाकर बहादुर सागर काम अटकाया अधर में

नाम के चक्कर में हावी हुई राजनीति, समाजसेवियों के अथक प्रयासों को लगा दिया बट्टा

माही की गूंज, झाबुआ। मुजम्मील मंसूरी

जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में इन दिनों त्रि-स्तरीय पंचायत चुनाव को लेकर राजनीति गरमाई हुई है। हालांकि नगरीय क्षेत्रों में इन चुनावों को लेकर किसी प्रकार की कोई हलचल नहीं है। केवल प्रशासनिक भाग-दौड़ नजर आ रही है। अधिकारी इन त्रि-स्तरीय पंचायती चुनाव को निपटाने में व्यस्त दिखाई दे रहे है।

इधर नगरीय निकायों में निर्वाचन को लेकर अभी थोड़ा समय है। फिलहाल जिले में केवल मेघनगर नगरपरिषद के चुनाव होना है। बाकी की परिषदों में कार्यकाल पूर्ण नहीं होने के चलते अभी चुनाव नहीं होंगे। मगर जिला मुख्यालय पर अभी से ही नगरीय निकाय चुनाव के मद्देनजर राजनीतिक उठा-पटक जबरदस्त तरीके से शुरू हो चुकी है। आने वाले नगरीय निकाय चुनावों में अपने वर्चस्व को बनाए रखने के लिए राजनीतिक प्रतिद्वंदिता चरम पर है। फिर चाहे इस प्रतिद्वंदिता से आम जनता का नुकसान ही क्यों ना हो।

इसी राजनीति के चलते जिला मुख्यालय स्थिति प्राचीन बहादुर सागर तालाब का सफाई व सौंदर्यीकरण कार्य पचड़े में पड़ चुका है। बहादुर सागर तालाब के इस कार्य का सेहरा किसी और के माथे सजता देख रॉबिनहुड के छर्रे पार्षद ने ऐसा रायता फैलाया कि नगरपालिका ने फंड का फंडा अपनाकर इस कार्य से हाथ खड़े कर दिए। रॉबिनहुड के दबाव में आकर कलेक्टर ने भी कह दिया ''जितना हो सकता था हमने कर दिया, अब हमसे ना हो पाएगा... आगे आप अपने हिसाब से देख लें।'' एक कलेक्टर के मुंह से इस तरह के अल्फाज निकलना उनकी अपनी दक्षता को दर्शाता है। वैसे तो कलेक्टर जिले का राजा होता है, हर विभाग, हर कार्य और हजारों कर्मचारी उसके अधीन होते है। बावजूद इसके अगर राजा में कुशलता का अभाव हो तो सोने की लंका भी अंधेर नगरी में बदल जाती है।

स्वीकृत योजना का अब तक क्यों नहीं हुआ उपयोग...?

कहने को झाबुआ शहर के बीचो-बीच चार तालाब है, जो शहर के सौंदर्य में कुछ दशक पहले तक चार चांद लगाते थे। मगर अधिकारियों की लालफीता शाही और नगरपालिका की लापरवाही के चलते शहर के ये सारे तालाब सेप्टीक टैंक में तब्दील हो चुके है। शहर के छोटे तालाब की स्थिति तो बेहद दयनीय हो चुकी है। जबकि शहर की शान माने जाने वाले बहादुर सागर तालाब के हालात भी कुछ ठीक नहीं है। इन दोनों तालाबों के सौंदर्यीकरण को लेकर 2016 में भोपाल से विशेष योजना के तहत लगभग 5 करोड़ 28 लाख रुपये की राशि स्वीकृत हुई। टेंडर निकाले गए और काम भी शुरू हुआ, लेकिन स्थिति सुधरने के बजाय और ज्यादा बिगड़ गई। काम की शुरूआत शहर के छोटे तालाब से की गई, जिस पर 1 करोड़ 9 लाख रुपये खर्च भी कर दिए गए। मगर तालाब अब पहले की अपेक्षा बद से बदत्तर स्थिति में पहुंच चुका है। नगरपालिका की इस कारस्तानी पर कलेक्टर मिश्रा ने कभी सवाल नहीं उठाए और ना ही किसी तरह की जांच करवाई। नगरपालिका अधिकारी एलएस डोडिया ने जो बताया उसी को कलेक्टर ने सच मान लिया। जब नगर के समाजसेवियों ने बहादुर सागर तालाब के सौंदर्यीकरण और गहरीकरण की मांग उठाई तो नगरपालिका और प्रशासन ने दबाव में आकर काम शुरू तो कर दिया लेकिन कमजोर इच्छाशक्ति के चलते अब बहादुर सागर तालाब भी शहर के छोटे तालाब की स्थिति में पहुंचने की कगार पर है। नगरपालिका ने फंड ना होने का हवाला देकर हाथ खड़े कर दिए। जबकि 2016 में भोपाल से तालाबों के सौंदर्यीकरण के लिए 5 करोड़ 28 लाख रुपये की योजना स्वीकृत पड़ी है। इस स्वीकृत फंड से नगरपालिका शहर के छोटे तालाब पर 1 करोड़ 9 लाख के करीब खर्च भी कर चुकी है। तो अब ऐसी क्या परेशानी है जो स्वीकृत योजना की बची हुई शेष 4 करोड़ से अधिक की राशि का उपयोग नगरपालिका नहीं कर पा रही है।

आगे आप अपने हिसाब से देख लें...कलेक्टर

शर्मशार कर देने वाली बात यह भी है कि जब नगरपालिका ने फंड ना होने का हवाला देकर हाथ खड़े किए तो कलेक्टर ने शहर के तालाबों के लिए भोपाल से स्वीकृत हुई योजना के बारे में जानकारी क्यों नहीं मांगी। बहादुर सागर तालाब के सौंदर्यीकरण कार्य में जी-जान से जुटे समाजसेवियों ने जब कलेक्टर से काम बंद होने का कारण जानना चाहा तो कलेक्टर मिश्रा ने नगरपालिका अधिकारी से सवाल करने की बजाय समाजसेवियों से कह दिया कि, जितना हो सकता था हमने कर दिया, अब हमसे ना हो पाएगा... आगे आप अपने हिसाब से देख लें? कलेक्टर के इस जवाब को किस नजरिये से देखा जाए? क्या कलेक्टर ऐसे ही होते है? या फिर नगरपालिका की तमाम कारस्तानियों का हिस्सा साहब के बंगले तक भी पहुंचता है? हालात तो यही इशारा करते है? साहब के घर हुए वैवाहिक कार्यक्रम में जिले के माफियाओं की सक्रियता इस बात का प्रमाण भी है कि बांस ऊपर तक पोला है।

रॉबिनहुड के छर्रे पार्षद पर है इल्जाम

वैसे तो शहर का बहादुर सागर तालाब वार्ड क्रमांक 1 में आता है, लेकिन यह तालाब पूरे शहर की शान माना जाता है। पहले इस तालाब की साफ-सफाई का कार्य फोटो छपाओ समाजसेवी या नाम छपाउ वार्ड पार्षद किया करते थे। लेकिन केवल अपनी थोथी वाह-वाही पाने और दिखावा करने तक ही उनका यह सफाई अभियान होता था। कभी घाटों की सफाई करते हुए फोटो अखबारों में छपवाए जाते तो कभी नगरपालिका के द्वारा लोहे की जालिया लगाए जाने पर अपने आपकों श्रेय देता प्रेसनोट जारी कर पार्षद अपनी वाह-वाही करता नजर आता था। कभी इस तालाब के सौंदर्यीकरण के लिए ठोस मुहिम किसी ने नहीं चलाई।

बहादुर सागर के सीमांकन और साफ-सफाई के लिए पिछले कई वर्षों से एक समाजसेवी जितेन्द्रसिंह राठौर लगातार प्रयास करते रहे। उन्ही के प्रयास का नतीजा यह सामने आया कि नगरपालिका और प्रशासन थोड़ा दबाव में आया और बड़े स्तर पर तालाब का सौंदर्यीकरण व गहरीकरण का कार्य शुरू हो पाया। लेकिन फोटो खिंचाउ और नाम छपाउ चटरगुल्ले नेता और पार्षद को यह रास नहीं आया। क्योंकि अब की बार पार्षद महोदय का ना तो नाम हो पा रहा था और ना ही उनकी तस्वीरें अखबारों में छप रही थी। दिन-रात तालाब के इस कार्य में जी-जान से जुटे जितेन्द्रसिंह राठौर की खूब तारीफे अखबारों में छपने लगी थी।तमाम मीडिया तालाब की खबरों में राठौर के ही वक्तव्यों को जगह दे रही थी। जिससे तिलमिलाकर पार्षद ने रायता फैलाने का मन बना लिया।

रॉबिनहुड ने बनाया दबाव

सूत्रों के अनुसार पार्षद अपना वर्चस्व गिरता देख और आने वाले नगरीय निकाय चुनावों को देख बोखला सा गया और रॉबिनहुड की शरण में पनाह ली। रॉबिनहुड का मुंह लगा पार्षद अपने आका की शरण में पहुंचा और अपनी आप बीती सुनाई। अपने छर्रे की तकलीफ देख रॉबिनहुड ने अपने पद और पावर का इस्तेमाल करते हुए तालाब के इस कार्य में लगी तमाम शासकीय संस्थाओं पर दबाव बनाते हुए कलेक्टर तक दबाव बनवाया। इसी का नतीजा रहा कि नगरपालिका और कलेक्टर जो इस तालाब के सौंदर्यीकरण पर पूरी क्षमता के साथ कार्य कर रहे थे कि अचानक हाथ खड़ेकर गधे के सिंग की तरह गायब हो गए। आम लोगों की माने तो जब तक तालाब के इस कार्य पर राजनीति हावी नहीं हुई थी, सबकुछ सही चल रहा था, लेकिन जैसे ही रॉबिनहुड व उसके छर्रे पार्षद की जन विरोधी सोच इसमें शामिल हुई बहादुर सागर तालब का यह कार्य पचड़े में पड़ गया। जनता के चुने गए जनप्रतिनिधि और पार्षद ही अपने स्वार्थ के चलते जनहितेषी कार्यों की बली चढ़ाने लगे तो समझा जा सकता है कि आम जनता का भगवान ही मालिक है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422